Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 02 28 फरवरी, 2015 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

बेटी बचाओ-एक चुनौती

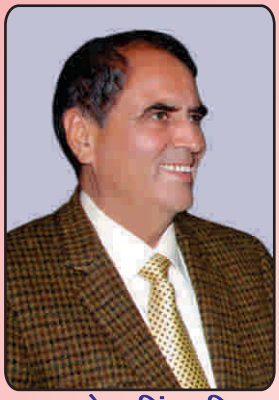

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

नारी अस्मिता का गुणगान हमारे यहां बहुत होता है जैसे ''यत्र पूजते नारी, तत्र रमते देवता''

वास्तविकता इससे बिल्कुल भिन्न है। यह कहानी है समाज के दोगलेपन की प्रकाष्टा की। हमारे धार्मिक ग्रंथ जिसकी गवाही हैं - ''ढोल गवार पशु और नारी यह सब ताड़न के अधिकारी तथा भजन, भोजन और नारी ये हैं पर्दे के अधिकारी।'' क्या नारी इंसान नहीं? उसे आधुनिक समाज में कंधे से कंधा मिलाकर चलने की बात करते हुए कभी प्रताड़ना कभी पांव की जूती की संज्ञा देते हैं। यही हाल रहा तो नन्ही किलकारी कहां से गूंजेगी? हमें मां चाहिए लेकिन बहन या बेटी नहीं। नारी को कोई हक नहीं कि वह खुली हवा में जी सके। हां, कमाई करने जाए, कमाई मर्द समाज के हाथ दे और खुद पैसे-पैसे की मोहताज रहे। वह मर्द का हर जुल्म सहे और ऊफ तक ना करे। मर्द के साथ सती हो जाए लेकिन मर्द उसका क्या है दूसरी ले आएगा। भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज के लिए बलि और सारा दिन काम में जुटी रहे खाने पीने को कुछ ना मांगे अन्यथा वह कुलटा व्यभिचारिणी ना जाने कैसे-कैसे संबोधनों से अलंकृत होती है। हम भूल जाते हैं जब बेटी ही नहीं होगी, बहन, पत्नी या मां कहां से आएगी?

तथ्य गवाह हैं केवल छोटे से राज्य हरियाणा की दूसरे क्षेत्रों की दशा इससे अधिक बेहतर नहीं है। कमोवेश बद से बदतर ही हैं। हरियाणा के आधे से अधिक देहात में स्त्री-पुरूष अनुपात एक हजार मर्दों के पीछे 500 से भी कम हो गई है। राज्य के 2400 गावों में वर्ष 2013 के दौरान एक भी लड़की पैदा नहीं हुई है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' लेकिन उसका तो अस्तित्व ही नहीं है फिर किसे पढ़ाए? स्वास्थ्य विभाग हरियाणा में उपलब्ध आंकड़े यह भयावह सत्य उजागर करने के लिए काफी है। प्रदेश के कुल 7363 देहातों में से 3974 गांवो में यह अनुपात 500 से भी कम है।

वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार राष्ट्र में 623.7 मिलीयन पुरूषों के मुकाबले 586.5 मिलीयन महिलाए हैं जबकि यूरोप संघ में 100 महिलाओं के मुकाबले पुरूष संख्या 95 है जबकि दोनों राष्ट्रों में महिलाओं को समस्त अधिकारी उपलब्ध हैं और भारत में 100 पुरूषों के अनुपात को 96 महिलाओं तक लाने के लिए 23 मिलीयन महिलाओं की जरूरत है। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत की आबादी से 60 मिलीयन महिला संख्या गायब है जो कि यू०के० की लगभग सारी आबादी के बराबर है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्र में 6 वर्ष तक की आयु वर्ग में लड़कों की संख्या 100 के पीछे 108 थी और यह संख्या इसी आयु वर्ग में हरियाणा में 120, पंजाब में 118, उत्तराखंड में 115, जम्मु काश्मीर में 116 व गुजरात में 111 प्रति 100 आंकी गई है। एक मैडीकल विशेषज्ञ की रिपोर्ट के अनुसार आज राष्ट्र में 80 हजार महिलाए हर वर्ष अवैध गर्भपात की शिकार होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार देश में प्रतिदिन 2000 कन्याएं पैदा होने से पूर्व नष्ट कर दी जाती हैं तथा 5 वर्ष तक की आयु की अधिकतर 75 प्रतिशत लड़कियां लड़कों के मुकाबले में पालन-पोषण की लापरवाही के कारण मर जाती हैं। राष्ट्र का वर्ष 1951 का स्त्री लिंग अनुपात 983, वर्ष 2011 में घटकर 914 रह गया है जो कि संपूर्ण सभ्य समाज पर शर्मनाक कलंक है।

भ्रूण हत्या, यौन शोषण, बलात्कार, घरेलू हिंसा, महिला उत्पीड़न की लगातार बढ़ रही घटनाएं सरकार की बेटी बचाओ मुहिम के लिए एक चुनौती है। राष्ट्रीय क्राईम रिकार्ड ब्यूरो के वर्ष 2005 के सर्वेक्षण के अनुसार आज राष्ट्र में हर तीन मिनट में एक महिला किसी न किसी प्रकार के जुल्म का शिकार हो रही है। हर 15 मिनट में एक महिला छेड़खानी, 53 मिनट में एक महिला यौन हिंसा, हर 23 मिनट में एक महिला अपहरण, जबरदस्ती व हर 20 मिनट में एक महिला बलात्कार का शिकार हो रही है। इसी प्रकार हर 10 में से 4 महिलाएं घरेलू हिंसा, 45 प्रतिशत महिलाएं अपने जीवन में एक बार शारीरिक व मनोवैज्ञानिक हिंसा का शिकार होती है और 26 प्रतिशत घोर शारीरिक हिंसा का शिकार होती है तथा 50 प्रतिशत से अधिक गर्भवती महिलाओं को हिंसक शारीरिक दुखों का सामना करना पड़ता है। एन सी आर वी की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र में प्रतिवर्ष 16 और 40 वर्ष की लगभग 6000 महिलाएं दहेज उत्पीड़न के कारण मारी जाती हैं जबकि गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार यह संख्या 15000 आंकी गई है।

शेष पेज-2 पर

'k"k i:t&1

राष्ट्र की क्राईम रिकार्ड ज्यूरौ के आंकड़ों के अनुसार राष्ट्र में रेप व महिला विरूद्ध अपराधों में वर्ष 2010 से 7.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सर्वे के अनुसार बलात्कार की हर 3 पीड़ितों में एक की आयु 18 वर्ष से कम और10 पीड़ितों में प्राय: एक पीड़ित की आयु 14 वर्ष से कम पाई गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ज्यूरौ की 2013 की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र में वर्ष 2012 में 24923 बलात्कार के केस दर्ज हुए और वर्ष 2013 में यह संज्या 33707 आंकी गई। इनमें से अधिकतर अपराधी पीड़िता के रिश्तेदार या जानकार ही हैं। यहां यह वर्णित करना मेरा फर्ज बनता है कि अज़्सर स्त्री लज्जा के नाम पर अपराध दर्ज ही नहीं करवाती। मेरी पुलिस सेवा में अज़्सर सिफारिशें आती थी कि अपराधी को किसी और अपराध में फंसा दो अन्यथा समाज द्वारा वह अबला ही अपराधी ठहरा दी जाएगी। इस बच्ची से शादी कौन करेगा? इत्यादि-इत्यादि। बदले की भावना हो या दहेज उत्पीड़न, भुक्त भोगी नारी ही होती है और यह भी सत्य है कि नारी की सबसे बड़ी दुश्मन नारी ही होती है। सास-ननद को सुंदर-सुशील-कमाऊ, भाभी या बहु तो चाहिए लेकिन उसका अस्तित्व का निर्णय कोई और करेगा। मेरी जानकारी के अनुसार 10 अपराधों में से बामुश्किल एक अपराध ही दर्ज हो पाता है।

हमारी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली ही रेप केसों में अग्रणीय भूमिका निभा रही है। यहां तक कि दिल्ली को विश्व की रेप राजधानी का खिताब मिल गया है-निर्भया कांड एक ज्वलंत उदाहरण है। यह जन आंदोलन बनने पर आनन-फानन में कानून भी बन गया लेकिन अपराधी नाबालिग था इसलिए सजा ना के बराबर। दिल्ली में वर्ष 2012 के 585 बलात्कार के मुकाबले वर्ष 2013 में 1441 रेप की घटनाएं हुई। इसी वर्ष राष्ट्र टाप असुरक्षित क्षेत्रों - मुंबई में 391, जयपुर में 192 व पुणे में 171 बलात्कार के मामले दर्ज हुए। वर्ष 2013 में मध्यप्रदेश में सबसे अधिक 4335 बलात्कार केस दर्ज हुए जबकि राजस्थान में 3288, महाराष्ट्र में 3063 व उज़र प्रदेश में 3050 व तामिलनाडू में 923 इस प्रकार के घृणित व जघन्य मामले किए गए यानि हर रोज 3 महिलाओं से बलात्कार हुआ जो कि सरकार की दोगली नीति व मानवता के खोखलेपन को दर्शाता है।

महिला उत्पीड़न का बीज तो हिंदू धर्म के आदि ग्रंथों में ही उपलज़्ध है। रामायण में सीता अपहरण, बाद में अग्नी परीक्षा, महाभारत में द्रोपदी चीर हरण तथा उसे एक वस्तु समझ जुए में दाव लगाना हारना आदि। मर्यादा पुरूषोतम राम भी एक धोबी के कहने पर अपनी सज़ी सावित्री पत्नी सीता की परीक्षा लेने निकल पड़े। यह सतयुग की बात थी फिर कलयुग में ज़्या नहीं हो सकता। हाल ही में असम में कांग्रेस पार्टी की एक विधायक रूमीनाथ ने पहला पति होते हुए दूसरे से शादी रचा ली। धर्मनिरपेक्षता की चद्दर ओढ़े पार्टी के ही कुछ लोगों ने विधानसभा के समक्ष ही उस पर हमला बोल दिया। पार्टी अध्यक्ष ने राज्य ईकाई का मामला कहकर पल्ला झाड़ लिया। अगर दो बार विधायक बनी रूमीनाथ की यह हालत है तो फिर आम जन के साथ ज़्या बीत रही हागी। स्त्रियों को घर व समाज में नियंत्रण में रखने के लिए हिंसा को एक ताकतवर व प्रज़ावी औजार की तरह 21वीं सदी में भी इस्तेमाल किया जाता है। अकेली बेसहाय औरत को प्रभावशाली लोगों के दबाव में ना आने पर सामूहिक बलात्कार या डायन तक घोषित कर दिया जाता है। विधवा किसी ख़ुशी में शामिल नहीं हो सकती वह केवल मंदिरों मे घुट घुटकर मरे किसी को ज़्या लेना देना। पुलिस व न्याय प्रक्रिया दबाव में तथा राजनीतिज्ञ वोटों की राजनीति कर किनारा कर लेते हैं। वक्त समाज की सोच बदलने का है। बदलाव हर स्तर पर नजर आना चाहिए जो शायद अभी संभव नहीं है।

स्त्री को बराबरी का हक देने की हामी तो भर ली लेकिन 60 वर्षों बाद अभी तक निर्णायाक भूमिका पुरूष के हाथ में ही है। लोकसभा में अभी तक महिला प्रतिनिधित्व बिल पारित नहीं हो सका जबकि राष्ट्र की प्रधानमंत्री एक फ ौलादी महिला भी रह चुकी हैं और राष्ट्राध्यक्ष भी। धर्म के नाम पर हजारों करोड़ रूपयों का खर्च होता है। दिल्ली में अक्षरधाम मंदिर के लिए बेशकीमती 100 एकड़ भूमि सरकार ने निशुल्क दे दी जो कि गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज है। हज सज़्सिडी के अतिरिक्त एक हजार करोड़ रूपये इमामों की सालाना तनज़्वाह पर खर्च होता है। केवल कुंभ मेले के प्रबंध पर के दरबार में भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। बिहार के बेगुसराय में दूर्गा पूजन के लिए गई दलित महिला को दबगों ने जमकर पीटा। पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने पर पुलिस ने भी दबंगों का साथ दिया। गत दिनों लखनऊ में दरोगा द्वारा थाने में पूछताछ के बहाने बुलाकर महिला से बलात्कार करने की हरकत की गई। बलात्कार का विरोध करने पर महिला से मारपीट करके उसके पति व बच्चों को जेल भेजने की धमकी दी गई। कोलकाता के हुगली जिले में खजुर दह सरकारी पुनर्वास गृह में मानसिक तौर से कमजोर महिला की रेप के बाद हत्या कर दी। हत्याकांड की जांच से खलासा हुआ कि इस पुनर्वास गृह में मानसिक तौर से विकृत व मूक बधिर 15 साल तक की लड़कियों के साथ हर रोज जबरदस्ती की जाती थी और यहां फ्री फार आल का आलम कायम था।

छज़ीसगढ़ के बालाघाट जिले में इलाज के नाम पर कम उम्र की महिलाओं की बच्चेदानियां निकाल दी गई जिसकी एवज में भारी रकम वसूल की गई। जिले में 500 औरतों के गर्भाशय निकाले जाने का मामला भी स्वास्थ्य विभाग के नोटिस में लाया जा चुका है जिस पर स्वास्थ्य विभाग व प्रशासन द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई। अप्रैल 2013 में मध्यप्रदेश में चलती बस में14 वर्ष की दलित लड़की के साथ 5 व्यक्तियों द्वारा बलात्कार किया गया। उसी वर्ष जून माह में भूमि विवाद में एक आदिवासी महिला के साथ 10 व्यक्तियों द्वारा सामुहिक बलात्कार किया गया।

17 वर्ष की बलात्कार पीड़िता की मौत के एक वर्ष बाद पंजाब पुलिस द्वारा दो अधिकारियों का तबादला करके एक अन्य पर आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया गया। केस की सुनवाई कर रहे न्यायधीश ने भी स्वीकार किया कि न्याय प्रणाली की ढ़ीलेपन व निष्क्रीयता के कारण अपराधी यह सोचता है कि वह सजा से साफ बच जाएगा जिस कारण महिला विरूद्ध अपराधों में बेलगाम वृद्धि हो रही है।

समाज के बेबस तबके के लिए बनाए गए सामाजिक व स्वंय सेवी संस्थाओं द्वारा संचालित आश्रय स्थलों में भी समाज द्वारा तिष्कृत महिलाओं, बेसहारा बच्चाों का जीवन व सज़्मान

सुरक्षित नहीं है। रोहतक के 'अपना घर' संस्था में बेसहारा औरतों व मासूमों के साथ दुराचार, उत्पीड़न और अत्याचार के मामले ने तो समस्त नारी जाति के अस्तित्व व सज़्मान को मिट्टी में मिला दिया है। इस संस्था में दुराचार, जुल्म के अपराधों के इलावा 25 महिलाओं में तो एड्स की पुष्टि हो चुकी है लेकिन प्रदेश सरकार पर अपराधियों को सरंक्षण देने के आरोप हैं। वास्तव में बेसहारा व समाज द्वारा तिष्कृत लोगों को आश्रय देकर उनको अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने हेतू बनाई गई सामाजिक व स्वंय सेवी संस्थाएं सरकारी सरंक्षण व राजनीतिज्ञों के सहयोग से मनमानी करने व पैसा कमाने का एक अड्डा बन गई हैं जो कि बेलगाम अपनी अनैतिक व अपराधिक गतिविधियां चलाती हैं।

ऐसा भी नहीं कि समाज में सब गलत ही हो रहा है। कन्या भ्रूण हत्या रोकने में कुछेक संस्थाएं आगे आई हैं पर उज़र भारतीय खापें एक मंच पर आई हैं। तालीबानी निर्णयों के लिए बदनाम खापें-समाज भलाई पर इतना पड़ा कदम उठा रही है। चौधरियों ने कोख चोरों पर धारा-302 में मुकद्दमें चलाने की बात कही है। लाडो के लिए वही खाप लड़ेगी जिसके माथे पर तालेबानी कलंक था। इतने बड़े स्तर पर महिलाएं - चौधरियों संग मंच तक विराजमान हुई। समाज के लिए एक सकारात्मक कदम है लेकिन यह अभी शुरूआती कदम हैं। समाज की सोच बदलने में वक्त लगेगा लेकिन जब जाग जाए तभी सवेरा मान लिया जाए तभी समाज और राष्ट्र का कल्याण है।

कन्या भ्रूण हत्या, महिला विरूद्ध अपराधों की बुराई को खत्म करने के लिए एन डी टी एज़्ट 1994 तथा अन्य कानूनों द्वारा प्रदज़् प्रावधानों को सुचारू रूप से लागू करना होगा। इसके साथ ही सामाजिक मानसिकता विशेषकर महिलाओं की सोच को बदलना होगा ताकि पुत्र की चाहत, वंश बढ़ाने की चिंता, अंतिम क्रियाक्रम पुत्र द्वारा किए जाने के संकीर्ण रूढ़िवादी विचारधाओं से समाज को उभारा जा सके। मध्यम वर्षीय परिवार के लिए लड़की की शादी को लेकर समस्या बन रही मंहगाई व लगातार बढ़ रही दहेज की मांग पर भी कानून द्वारा अंकुश लगाने की जरूरत है। महिला सशक्तिकरण कन्या भ्रूण हत्या व महिला विरूद्ध अपराधों को रोकने में काफी कारगर हो सकता है इसलिए पुलिस बलों, सुरक्षा बलों, सभी सरकारी सेवाओं तथा देश की संसद में महिलाओं की 50 प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए ताकि महिला वर्ष आत्म निर्भर होकर सज़्मान से निर्णय ले सके। इसके इलावा पुलिस व कानूनी तंत्र के साथ युवा वर्ष का आन लाईन तकनीकी तालमेल, पुलिस तंत्र के साथ युवा सलाहकार समितियां बनाकर, युवा वर्ष के तालमेल से समस्या निराधारण दृष्टिकोण के साथ क्राईम रोकथाम के लिए युवा क्राईम निरोधक वैबसाईट बनाकर पुलिस अधिकारियों को अपराधों के प्रति प्रशिक्षण देकर, उचित सुरक्षा तथा युवा वर्ष के तालमेल को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक पुलिस स्टेशन में युवाओं से तालमेल स्थापित करने आदि कार्यक्रमों द्वारा पुलिस तंत्र को महिला विरूद्ध हो रहे विभिन्न अपराधों को नियंत्रण करने हेतू सक्षम बनाया जा सकता है।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0 (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरो प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 25/5'3" M.Tech.Computer Science, Working as Assistance Professor in NIT, Kurukshetra. Salary Rs.30,000/- PM. Father & Mother working in Haryana Govt. as Class-I officers. Avoid Gotras: Pannu, Gill, Dhull (Kharb not direct). Cont.: 08930303002
- SM4 Jat Girl(DOB.04.11.1990) 24.4/5'7" B.Tech. I.T. Working in M. N. C., I.B.M in Kolkatta with Rs. 5 Lac package PA. Avoid Gotras: Dalal, Kadian, Dahiya (not direct) Mann, Deswal, Sihag, Cont.: 09996111290, 09416823236
- SM4 Jat Girl 25/5'5" B.Arch. from Murthal. Working in a reputed private company at Panchkula. Avoid Gotras: Tomar, Gehlayan, Jatrana, Cont.: 07206603248
- SM4 convent educated Jat Girl 30/5'2" B. Tech.. Working as Manager in MNC with Rs.10.60 Lac package PA. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Cont.: 09988688762
- SM4 Jat Girl (DOB June, 1991) 23.8/5'7" M.Sc.(Medical Bio-Tech.) B.Ed. Avoid Gotras: Gehlawat, Rathi, Malik, Cont.: 09671223723, 09050734707
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA, Employed as supervisor in Central Govt. on contract basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl, 26/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula, Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan, Cont.: 08146082832
- SM4 Jat Boy 26/5'8" B.Tech. MBA from P.U. Working as Junior Manager in SML ISUZU Delhi with Rs. 6 lac package PA. Own house at Zirakpur. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sanhdu, Cont.: 08872856484
- SM4 Jat Boy 26/5'7" B.D.S. Doctor, Doing job. Avoid Gotras: Narwal, Malik, Ghanghas, Cont.: 09417359925.
- SM4 Jat Boy 28/5'11" B.Tech Electrical. Working in area of information as Senior Engineer in MNC with Rs.10 Lac PA. Avoid Gotras: Tanwar, Jakhar, Sheoran, Cont.: 08284050424
- SM4 Jat Boy BOB 25.03.1990/5'6", B.Sc (Hons.), Math & Computer (PU Chd.), M.Sc (Hons.) Mathematic (PU Chd.) B.Ed with CTET and HTET cleared, giving Tutions. Avoid Gotra: Mann, Dhanda, Cont.: 9815253211 (Performance for Panchkula, Chandigarh & Mohali)

SUBHASH CHANDRA BOSE- THE UNFORGETABLE HERO

- R.N. Malik

The golden period of Indian History after the Gupta period (300 BC) has been the half century between 1900-1950. This calibration is for two reasons. Firstly, India for the first time broke the shackles of 14 centuries old slavery in a most orderly and peaceful manner under the guidance of Mahatma Gandhi. Secondly, India threw up a galaxy of very great leaders (Tilak, Gandhiji, Patel, Bose, Prasad, Rajaji, Kriplani, Motilal, Jawaharlal, Lajpat Rai, Azad, Deshbandhu CR Das, Jaiprakash etc.), who made supreme sacrifices in their lives and exhibited impeccable integrity in their conduct. Mahatma Gandhi provides the solitary example of liberating the people of two countries (South Africa and India) from foreign subjugation one after the other in one life time. There were others who too brought great name and fame to the country by excelling in different fields. Tagore and Dr Raman won Nobel Prize. Bhagat Singh and many other kissed the gallows for the sake of liberating the country. Ramanujam made his name as great mathematician in England. He died at the young age of 32. Who knows what he would have explored and achieved had he lived for another 30 years or so. Sardar Patel achieved something astounding when he ingeniously arranged the merger of 565 states in the body politic of India. This act was the other half of India's independence. But Alas! most of these great men left for heaven before 1951. Since then, there has been a long famine of such great people in public life. The unfortunate part is that the lives of these great men no longer remind and inspire the coming generations. The Government too makes no effort to make the biographies of these great men as part of educational curriculum in the universities.

After Tilak, the baton of freedom struggle was taken up by Gandhi Ji. The band of young leaders around him was more or less consisted of little angles on the earth and they effectively played the role of obedient solders under his guidance. After 1928, the three leaders in the top echelon around Gandhi Ji were Sardar Patel, Subhash and Jawaharlal. But the trials and tribulations in the life of Subhash Bose matched almost equal to those of Gandhi Ji. It is very difficult to say who between the two (Patel and Subhash) was greater. Patel did the most arduous job of merging 565 states whereas Subhash formed the Provisional Government of Azad Hind on October 21, 1943 and attacked the British Indian Army (BIA) on March 18, 1944 on Indo-Burmese border. It was most tragic event of Indian history that Indians were fighting against each other on the Indian border. Gandhi Ji was lucky to win his battle because Labour Party came to power in 1945 elections and Churchill, his bete-noir, became powerless. Subhash was not so lucky at the winning tape. He engaged the British Indian Army for 3 months at Kohima and Imphal but early rains in May that year spoiled the whole show.

Subhash became passionate about liberating his country from the Britishers right from the day of his adolescence. His passing ICS exam with 4th position in the merit list and topping the English Essay paper is the big proof of his brilliance. His resignation from the same ICS within the probationary period is equally big for his sacrificing nature. ICS in those days was called heaven-born service and passing this exam was equivalent to princedom. His escape to Germany on 18th January, 1941 was as risky as walking barefoot in a snake infested jungle. He passed through the hell till he landed in Berlin on April 2 1941 from Peshawar. His voyage from Germany to Sumatra (9th February 1943 to 07th May, 1943 – 75 days) in a submarine was perilous. His commanding the INA, forming Provisional Govt. of Azad Hind in Singapore and fighting a grueling battle with British-Indian Army in Kohima and Imphal for 3 months and the retreat back to Singapore through a 2000 miles hazardous journey with floods is a saga of bravery, undying spirit, heroism and commitment to the liberation of the country from the British yoke.

Subhash came back from England after resigning the ICS in May, 1921. The Non-Cooperation Movement launched by Gandhi Ji was at its peak. Subhash adopted CR Das as his political Guru (Gandhi Ji had adopted Gokhale) and worked for the success of the movement under his command. Soon he made his name for delivering inflammatory speeches. Unfortunately, Gandhi Ji did not have a great orator in his team throughout the freedom struggle except Abdul Kalam Azad. But his speeches lacked the punch and sting of Subhash. Subhash was arrested along with his Guru in December, 1921 and kept in jail for 8 months. The British Government recognized his potential to arouse and stir up his countrymen to bring a la French revolution in India and expel the Britishers from the Indian shores. Therefore, the Govt. was quick to single him out for special treatment using the harsh provisions of anti-terrorist Acts in the Statute and keep him in jail without trial to stifle his voice. This policy worked well and he was either jailed or interned during 70% of his stay of 12 years in india between 1921 and 1940.

Subhash got the first taste of this medicine when the government arrested him on October 25, 1924 (He was CEO of Calcutta Corporation at that time and used to donate half of his salary for charity work) on the charge of harboring revolutionary activities without any shred of evidence and sent him to Mandalay jail on January 25 to 1925 for 30 months without trial. He was released only when his health deteriorated very much. He was arrested again on 23rd January, 1930 (his 32nd birthday) and imprisoned for one year on the charge of sedition and taking part in an unlawful procession (In late 1929 he had been elected President of All- India- Trade- Union Congress).In April he and

other Congress Leaders in Alipur Central Jail severely beaten with lathis when they protested against assault on other prisoners by the guards. Subhash remained unconscious for one hour.Look at his popularity in Bengal:he was elected the Mayer of Calcutta corporation from the jail itself. Again January 26, 1931,vain he was leading a peaceful Independence Day procession, he was brutally attacked by mounted police (they were Indians) and produced in the court the next day in blood – soaked clothes. He was charged with rioting and sent to prison again for three months . He was arrested in 1932 along with other leaders during the Civil Disobedience movement and kept in Seoni jail (MP) along with his brother Sarat Chander Bose. He was kept in a solitary confinement and the roof of the cell consisted of G.I sheets. The heat during the months of summer was unbearable. He developed severe pain in his abdomen and was allowed to go to Europe for treatment at his own expenses. But the tyrannical govt. did not allow him to see his parents before his departure and sent him straight to the ship in an Ambulance for his onward journey in February 1933. He remained in Europe for 3 years and came back to India in April 1936 and was arrested soon after his arrival and kept in jail for 10 days and then interned in his house for one year in Karseon near Darjeeling and released in March 1937. There was bonhomie and ceasefire between the govt. and the Congress for two years. The fight broke out again in September, 1939 when England declared war against Germany. On July 3, 1940, Subhash was arrested again under Defense of India Rules on the charge of sedition. This was the last day Subhash spent as a free man in India. Looking at his indefinite incarceration in jail, he went on hunger strike in jail on November 1929 and Congress turned its back completely and kept mum at the atrocities and indignities being inflicted on Subhash – its erstwhile President for two years. The Government played a 'cat and mouse' policy and interned him in his house on December 5 under strict government surveillance and intended to arrest him again as soon as he was fully recovered from the side effects of his seven days fast in the jail. Subhash got wind of this strategy and finally escaped to Germany on January 18, 1941 – 3 days before his 44th birthday.

Inspite of these disheartening road blocks, he played a stellar role in freedom struggle during his stay in India. He hogged the lime light on the national radar in the Dec. 1928 Session of the Congress at Calcutta. He entered the pandal along with his volunteers in military uniforms to a rupturous applause from the delegates. He moved an amendment to fight for complete independence instead of Dominion Status as suggested by Motilal Nehru in moving the resolution. Subhash lost the battle of votes by 877 to 1372. But this incident culminated in passing the resolution declaring, "The aim of freedom struggle is to get complete independence" at the December 1929 Session at Lahore. Thereafter, the Congress party started celebrating 26th January as Independence Day, every year.

His great moment of glory came in 1938 when he was made the Congress President with the good wishes of Mahatma Gandhi. Sardar Patel did not relish this decision. Even then he organized the 51st Congress Session at Haripura in Gujarat at a grand scale where Subhash was brought in a chariot pulled by 51 bullocks in the Pandal. The Presidential address delivered by Subhash was equally innovative and brain storming. For the first time, new issues like commitment to eradicate poverty, setting-up of Planning Commission, land reforms , rural indebtedness , initiating the process of democratization in 565 princely states, warning against the policy of the Divide & Rule by the British Government between the princes and the elected representatives under the 1935 Act were discussed thread bare .

But the year 1939 was an anticlimax of his glory. He fell out with Congress because Gandhi Ji did not start a mass movement when the Viceroy Lord Linlithgow totally ignored the resolution of CWC for assuring independence to India in exchange of support to war efforts of the British Govt. In fact, Congress asked its Premiers in 8 states to resign. This is what Jinnah and the Viceroy wanted. However, Gandhi Ji retrieved the situation when he launched the Quit India Movement on August 9, 1942 and delivered his famous Bose like speech asking the people "DO OR DIE" at Bombay. Jawahar Lal Nehru and Azad were against this move but fell in line when Gandhi Ji asked them "You can leave the Congress, if you don't agree with the proposal". Sardar Patel supported Gandhi Ji whole heartedly and the large gathering at Maidan was largely due to his efforts. Now Gandhi Ji had become a great fan of Bose and called him "Patriot of Patriots" after he started broadcasting from Germany through Azad Hind Radio in February, 1942.

The most glorious role of Subhash came in July 1943 when he took over the command of INA (of Indian soldiers who surrendered before Japanese Army in Singapore and other places numbering 70000) in Singapore, which was in total disarray till then. All the soldiers and officers were mesmerized, excited and electrified by his presence and speeches. The Indians in the Asian countries were equally hypnotized and sensitized. They donated money and jewelry enthusiastically for the cause of his struggle . Two Indian millionaire in Rangoon (Abdul Habib and Smt Betai) donated assets worth Rs 2 crore earning the decoration of Sewak-i-Hind for the cause of his struggle. Young boys and girls started joining INA. A new regiment of girls (called RANIS) under the name of 'JHANSI KI RANI' was formed under Laxmi Swaminathan. Thereafter the slogan of "Delhi Chalo" rented the air everywhere. Unlike Hitler ,Tojo, the Prime Minister of Japan was equally impressed with his persona and assured him of all military and financial support to his struggle. He also declared that the Indian territory won during the war would be brought under the control of the INA.

The planning of Subhash was greatly based on the belief that once INA reached the Indian Border and made an offensive, the whole nation will rise up against the British Government and come on the streets (But nothing of this kind happened at that moment). He shifted his headquarters at Rangoon and planned the joint strategy with General Mutagauchi to attack India in March, 1945 from Kohima. Japanese Army consisted of 84000 soldiers and INA of 12000. The aim of Japanese Govt. was to retain Burma at any cost and that of INA to enter India. Meanwhile, Churchill felt greatly relieved

after the defeat of Germany in Egypt and Russia. Now he marshaled all his resources to repulse Japanese army back to the wall. The British Indian army (BIA) consisted of 1.5 lac solders equipped with latest weaponry together with full air cover of Air Force. Japanese air support was badly lacking because of her engagement with America in Pacific Islands in the far east.

The joint offensive started on 18th March, 1945 INA officers consisted of Mishra Ratura, Kiani, Sauqat Malik, Mahmood Ahmad and Shahnawaz. Initially, the joint forces fought very bravely and almost overpowered the BIA. The joint command cut off the Kohima – Imphal road and encircled the BIA. General Mutagauchi remarked, "I have caught a big fish in the net." Subhash was against this move and wanted to leave this access for the BIA to retreat. Now BIA fought ferociously to save itself. Bombing and air reinforcement saved the day. The engagement continued for 3 months. To make matters worse, early heavy rains started in May. The flood waters now cut off the logistic lines completely for the Japanese and INA armies. Reinforcement of any kind became impossible (General Maneakshaw, then Colonel, noted this observation the hard way and remembered it till 1971. That is why, he refused point blank to Mrs. Indira Gandhi to attack East Pakistan in the summers of 1971. He knew that Indian Army will meet the same fate as the Japanese and the INA in 1945).In fact, December 1944 was the right time for the offensive.

Civilian uprising against the Govt in India did not take place at all as envisioned by Subhash. This could be due to back-breaking famine in Bengal where 30 lac people died. Secondly, the Govt. put a tight lid on the flow of information to India from the border. The fact of the matter was that there was nobody in India to eulogize and back up the efforts of Subhash and exhort Indians to rise against the Govt. Consequently, INA and the Japanese army started making retreat in May through a very hazardous journey of 2000 miles. General Sehgal, Dhillo and Sahnawaz were taken as prisoners of war. According to General Salim of BIA, "Had the enemy by-passed Kohima and taken the Dimapur Rail Head, we would have faced a great disaster." He thanked General Kwabe of Japan who committed this mistake. Overconfidence of Japanese Generals was also responsible for their complacency. The Japanees army took only light arms thinking that arms captured at Kohima Imphal offensive would be sufficient to proceed further.

After reaching Singapore, Subhash regrouped his army. Strangely every soldier was still in very high spirits and in a mood to fight against BIA again. Subhash suggested not to surrender at all and fight to the last drop of blood. But Japan surrendered on 15th August after the bombing on Hiroshima and Nagasaki. So the Cabinet of Azad Hind Govt. decided that Subhash should fly to Japan and decide the future course of action from there as it did not want him to be held as prisoner of war at any cost . Accordingly, Subhash boarded a Japanese fighter plane alongwith Col. Habibur Rahman on 15th August for Tokyo. Before departure,he handed over the command of Azad Hind Govt. to General Zamin Kyani (probably father of General Kyani of Pakistan Army, retired recently). He also distributed sufficient money to the girls of Jhansi Ki Rani Regiment and assured their safe returns to their homes.But the future willed otherwise. The plane crashed at Taipei Airport on 18th August, 1945. The body of Subhash was badly burnt and he died in the hospital. Strangely, no photograph of that moment is available in any record till now.

After carrying out a very long struggle, Subhash lost the battle at the winning tape in Kohima. But the war efforts of INA bore fruits a little later. The British Govt. ordered the trial of General Shahnawaz, Gurbuksh Singh Dhillon and Prem Sehgal in Nov. 1945 at the Red Fort, Delhi. Jawahar Lal Nehru and Bhola Bhai Desai appeared on their behalf. Jinnah offered to argue the case of Shahnawaz only. Shahnawaz rebuked him and refused his services point blank. The trial stirred the whole nation. The nationalist press started narrating the stirring accounts of the heroism of INA soldiers. Violent protests erupted in Calcutta, Bombay, Karachi and other cities of India. Great spectacle of Hindu-Muslim unity was visible again. The court sentenced the three INA officers to deportation for life in Rangoon. But General Claude Auchinleck, the Commander-in-Chief of BIA commuted the sentence and set the officers free fearing a great backlash upheaval. This incident triggered a chain of events against the authority of British Govt. like mutiny in Indian Navy. Now the Govt. started thinking of packing up from India very soon. The day of deliverance came on 15th August 1947 and when Indian flag was being unfurled on the Red Fort; absence of Subhash Bose was sorely missed by one and all.

Subhash Chandra Bose was also a human being and so was prone to making mistakes. His first mistake was to re-contest the presidential election in 1939. He won the election but it was not required and he should have abide by the wishes of Gandhi Ji and others, particularly of Sardar Patel. This mis-step completely isolated him from the Congress. The second mistake was that he did not set up a close working relationship with Sardar Patel. This formidable combination would have carried the movement in a more radical way. The real problem was that Subhash was xenophobic and was always a leader in hurry whereas Congress under Gandhi Ji believed in the dictum "Slow and Steady wins the race." His risky journey to Germany instead of Japan was the third mistake. Two years in Germany were simply wasted. But for these mistakes, his entire struggle has been bold, engaging, heroic, exemplary, turbulent, holistic and inspiring. Unfortunately, the entire effort was solo and solo efforts have rarely succeeded in the past. But his popularity in the hearts of people remained greater than even that of Gandhi Ji and Nehru. The entire INA fought with undying spirit with two aims in mind; victory or martyrdom as enunciated in 37thSloka of second chapter of great Bhagvat Gita which states, "If killed, you will obtain heaven. If victorious, you will enjoy the throne. Therefore stand up, Oh, Son of Kunti, resolve up for war."Observing the heroism of Subhash various authors have called him Gorge Washington or De Valera of India, Indian Samurai or a Springing Tiger. To me, he was a nationalist to the core and a great defiant and daunting fighter. Such people are borne once in centuries. The biographies of this great man need to be read with same reverence and jest as we read Bhagvat Gita, Quran and Bible.

[illegible]

जनवरी 24, दीनबंधु सर छोटूराम बहु आयामी प्रतिभा के स्वामी थे जो वकील और मुवकिल खुद ही थे इसलिए किसान के मर्म को उन्होने पहचाना और उसकी बेड़ियों को तोड़ने हेतू जीवन भर संघर्षरत रहे। यह उद्गार आज जाट सभा चंडी÷ढ द्वारा आयोजित दीन बंधु सर छोटूराम की 134वीं जयंती समारोह के दौरान समारोह के मुज्य अतिथि सांसद रतन लाल कटारिया ने सर छोटू राम को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए व्यक्त किए।

समारोह के मुज्य अतिथि ने कहा कि सर छोटू राम जेसे हीरे कभी कभार पैदा होते हैं जो पथ प्रदर्शक बनकर सदा सदा के लिए अपना एक मुकाम बना लेते हैं। दीन बंधु के लिए जाति-पाति का कोई स्थान नहीं था बल्कि किसान मजदूर हर जाति धर्म का उनका प्रशंसक है। जाट सभा के प्रधान एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा0 एम0एस0 मलिक, आईपीएस (सेवा निवृत) ने कहा कि भगवान को हम तीन रूप में देखते हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो पैदा करने वाले, पालक तथा सहारंक की भूमिका निभाते हैं। किसान अन्न पैदा करने तथा सभी का पेट भरने की भूमिका निभाते हुए भी भूखे पेट सोने को मजबूर हैं। सर छोटू राम किसान के इस मर्म से वाकिफथे और उन्होने सदा किसान की बैबूदगी हेतू कार्य किया। किसान के खेत हेतू पानी, बच्चे हेतू शिक्षा तथा ऋण मुक्ति के लिए सहकारी खेती जैसी प्रथा के लिए प्रयासरत रहे। उनकी तपस्या रंग लाई - लूट खसूट की प्रक्रिया का समापन हुआ। तकावी ऋणों से छुटकारे हेतू खेत के लिए पानी की व्यवस्था, बार-बार आते अकाल से निपटने हेतू पानी का भरोसेमंद स्त्रोत भाखड़ा डैम तथा उसकी पैरवी हेतू अनेकों कानून बनवाए। वे दुश्मन से भी प्यार से काम निकलवाने में निपुण थे। ऐसे किसान, मजदूर, मजलूम मसीहा की आज नितांत आवश्यकता है।

अपने ओजस्वी भाषण में डा0 मलिक ने प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई महत्वपूर्ण मुहिम 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला के समस्त सदस्यों की ओर से भरपूर स्वागत व समर्थन करते हुए कहा कि सरकार के इस सराहनीय प्रयास से आज की ज्वल्लंत समस्या - भ्रूण हत्या की रोकथाम व लगातार कम हो रहे कन्या अनुपात को बढ़ाने में जागरूकता उत्पन्न होगी। सर छोटू राम ने वर्ष 1940 में ही स्त्री शिक्षा व कन्या बचाओ की वजाफ्त की थी जो कि आज प्रशासन के समक्ष एक चुनौती है। जाट सभा आरंभ से ही स्त्री शिक्षा, कन्या भ्रूण हत्या व नारी सशक्तिकरण आदि मुद्दों को कार्यक्रमों व विचार गोष्ठियों के माध्यम से उजागर करती रही है। उन्होने जाट सभा की तर्ज पर राष्ट्र की सभी जाट संस्थाओं व समाज सेवी संस्थाओं से भ्रूण हत्या को रोकने व स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा सरकार द्वारा इस संदर्भ में शुरू किए गए महत्वपूर्ण अभियान को आगे बढ़ाने की अपील की। इस अवसर पर समाज के ज्वलंत विषय - समाज में पनप रही नशावृज़ि, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, आनर किलिंग आदि सामाजिक बुराईयों के साथ-साथ देश की सुरक्षा अखंडता व आन बान के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व युद्धवीरों के आश्रितों व परिवारों के लिए सरकारी सेवा में आरक्षण आदि प्रमुख मुद्दों पर भी विशेष तौर से विचार विमर्श किया ÷या।

जाट सभा ने इस अवसर पर खेलों तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन क्षेत्रों में उभरते हुए मेधावी छात्रों तथा खिलाड़ियों को सज़्मानित किया। सभा द्वारा जाट भवन चंडीगढ तथा हरियाणा के अन्य परीक्षा केंद्रों पर 4 जुलाई 2014 को आयोजित की गई अखिल भारतीय भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं तथा सभा द्वारा 24 नवंबर 2014 को 'प्रदुषण विनाशकारी' विषय पर आयोजित किए गए पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को भी प्रमाण पत्र व नकद पुरूषकार देकर सज़्मानित किया गया। सभा के महासचिव द्वारा वर्ष 2014 के दौरान जाट सभा द्वारा किए गए विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों के साथ-साथ सभा द्वारा सैज़्टर 6 पंचकुला में निर्माणाधीन सर छोटू राम भवन की प्रगति रिपार्ट भी पेश की गई।

समारोह के दौरान जाट सभा के वर्ष 2014 में सरकारी व अर्धसरकारी सेवाओं से सेवा निवृत होने वाले आजीवन सदस्यों को भी सज़्मानित किया गया। सभा द्वारा चलाई जा रही समस्त सामाजिक व अन्य कल्याणकारी गतिविधियों की पूर्ण जानकारी सहित दीन बंधु सर छोटू राम की जीवन गाथा व सिद्धांतों पर आधारित स्मारिका व सभा की गतिविधियों/कार्यक्रमों के वार्षिक कलैंडर का विमोचन भी मुज्य अतिथि द्वारा किया गया।

समारोह के दौरान बहादुरगढ़ से राष्ट्रीय ज्याति प्राप्त अनुभवी पेशेवर कलाकार - राजबाला एण्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले विभिन्न रागनी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुज्य आकर्षण रहे। इस अवसर पर पंचकुला के विधायक श्री ज्ञानचंद गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।

गुण की पूजा सर्वत्र होती है, बड़ी सम्पत्ति की नहीं, जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा वैसा वन्दनीय नही होता जैसा द्वितीय का निर्दोष क्षणा चंद्रमा।

जाट समाज के गौरव

राकेश सरोहा

जाट जाति एक आदिकालिन जाति है जिसमें अनेक असाधारण विशेषताएं है जिसके कारण जाट जाति समस्त विश्व में अपनी विशेष पहचान रखती है। जाटों का गौरवमय व गरिमा मण्डित इतिहास रहा है परन्तु उसे लेखनीबद्ध नहीं करने के कारण विश्व के सामने इस जाति की न्यूनतम जानकारी ही उपलब्ध हो पायी है। यह सच है कि जिस जाति का इतिहास नहीं होता, वह जाति मृतप्राय है। जाट जाति के साथ भी ऐसा ही हुआ है पहले जाट जाति में पढ़े लिखे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम थी जिसके कारण वह जाट जाति की प्रगति का विवरण नहीं लिख सके परन्तु अब इस दिशा में अच्छा प्रयास किया जा रहा है। किसी भी जाति की उन्नति उस जाति में उत्पन्न महापुरूषों द्वारा होती है। जाट जाति में अनेक ऐसे महान व्यक्ति हुए है। जिन्होंने समाज व जाति के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया इन महापुरूषों ने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण सफलता प्राप्त करके जाट जाति के इतिहास को गौरवमयी बनाया है। ऐसे महापुरूषों के कार्य भावी पीढ़ी में त्याग, सामाजिक मूल्यों के प्रति आस्था तथा जातीय गौरव की भावना पैदा करने में सहायक सिद्ध होते है। जाट जाति में बहुत से ऐसे महापुरूष पैदा हुए है जिन्होंने अपने परिवार, समाज, जाति तथा देश के मान सम्मान के लिए अनेक यातनाऐं सहकर भी हार नहीं मानी तथा जाति व देश के गौरव को बढ़ाया है। जाटवीर सदैव से ही वीर, पराक्रमी, साहसी, चरित्रवान, कुशल शासक, शिक्षा शास्त्री, राजनीतिज्ञ, युद्ध कौशल में निपुण होने के साथ–साथ साहित्य और संस्कृति के भी रक्षक रहे हैं। जाट जाति का गौरव बढ़ाने वाले जाट महापुरूषों की संख्या काफी लम्बी है परन्तु यदि हम जाट जाति की 101 महान हस्तियों का चयन करें तो उनमें इन जाट गौरवों का चयन उचित होगा जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है :– 1- lezkV g"kZo/kZu&हर्षवर्धन महाप्रतापी, कुशल प्रशासक, धर्मात्मा तथा गन्तन्त्र प्रणाली के संरक्षक थे। 2- egkjktk lwjtey&महावीर, बहादुर, साहसी, कुटनीतिज्ञ भरतपुर रिसायत के शासक थे। 3- egkjktk j.kthr flag& महाराजा रणजीत सिंह भारत के महान शासक थे। इनका राज्य दिल्ली से पेशावर तक फैला हुआ था। 4- egkjktk Hkhe flag jk.kk&गोहाद के राजा थे तथा अत्यंन्त महान, शोर्यवली, संगठनकर्ता, शक्तिशाली तथा प्रतापीराजा। 5- jktk ukgj flag&भारत के स्वाभिमान के प्रतीक, वीर बहादुर, क्रान्तिकारी, अग्रेंजों की नाक में दम करने वाले बल्लवगढ़ नरेश। 6- ljnkj Hkxr flag& अमर शहिद वीर, क्रान्तिकारी तथा देशप्रेमी। 7- jktk egsUnz çrki&मुरसान (अलीगढ़) के महान क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता सैनानी। 8- yksd nsork ohj rstkth&प्रसिद्ध लोकदेवता, पराक्रमी, वचनपालक तथा गौरक्षक। 9- pkS NkTtw jke& लाम्बा गोत्रिय दानवीर, दयाशील तथा व्यापारी जाट। 10- lj NkWVwjke&कुशल राजनितीज्ञ व किसानों के हितेषी तथा जाट समाज के महान सुधारक। 11- pk/kjh pj.k flag&भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, उ०प्र० के पूर्व मुख्यमंत्री किसानों के हितेषी तथा सर्वसमाज के नेता। 12- pk/kjh nsohyky flgkx&भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री, किसानों के नेता राजनीतिक किंग मेकर। 13- pkS egsUnz flag fVdSr&प्रसिद्ध तथा जुझारू किसान आन्दोलनकारी नेता। 14- fczxsfM;j gksf'k;kj flag& भारत–चीन युद्ध में बहादुरी से युद्ध किया तथा भारतीय सैनिकों को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। 15- dusy gksf'k;kj flag&परमवीर चक्र विजेता, भारत–पाक युद्ध के महानायक। 16- çeohj xksdqyk tkV–महापराक्रमी, वीर ओरगंजेब का दुश्मन तथा जाटों के मान सम्मान के लिए बलिदान देने वाला। 17- pwMkeu tkV& जाट शक्ति का संगठनकर्ता, महावीर जाट जोकि गोरिल्ला युद्ध लड़ने में बहुत निपुण था। 18- ohj tkVoku& रोहतक हरियाणा का बहादुर जाट सरदार जोकि राष्ट्रभक्ति को उच्च भावनाओं से भरा हुआ था। 19- egkcyh ;ks)k fnYyk& महाराजा विक्रमादित्या का कुशल सेनापति व दिल्ली का राज्यपाल। 20- 'kghn dkUgk jkor&महानवीर, क्रान्तिकारी व भारतीय संस्कृति के प्रेमी। 21- ckck 'kkgey tkV&महान क्रान्तिकारी तथा अद्‌भूत संगठन शक्ति के स्वामी। 22- Lokeh LorU=rkuUn ljLorh&स्वामी जी आर्य समाज के महान विद्वान सन्यासी। 24-Lokeh vkseku ljLorh& वैद्धिक धर्म और सस्कृति के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान। 25- pkS cyno jkt fe?kk&राजस्थान के प्रसिद्ध पुलिस अधिकारी, किसान मसीहा व समाज सेवी। 26- pkS j.kchj flag gqMk& पूर्व सांसद सदस्य व भारत का संविधान बनाने में योगदान। 27- pkSjke fuoklk fe?kk&सादगी सरलता, ईमानदारी व शान्त स्वभाव के धनी पूर्व लोकसभा व राज्य सभा सांसद। 28- pkS calhyky&भूतपूर्व मुख्यामंत्री हरियाणा, पूर्व रक्षा मंत्री व रेलमंत्री भारत, कुशल प्रशासक व अनुशासन प्रिय। 29- pkS lkfgc flag oek&भूतपूर्व मुख्यामंत्री दिल्ली प्रदेश, पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत, धार्मिक व सांस्कृतिक योद्धा। 30- pkS Mk- jke/ku flag&विश्वविख्यात कृषि वैज्ञानिक व हरित क्रांन्ति के जनक। 31- pk- nkjk flag jUekoku&विश्वविख्यात पहलवान, प्रसिद्ध अभिनेता तथा पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय जाट महासभा। 32- egkjktk N= flag jk.kk&गोहद के महानतम शासक, प्रजा हितेषी और दयालु। 33- ohj tokgj flag&अपने पिता महाराजा सूरजमल की तरह बहादुर सैनिक, कुशल सेनापति और कठोर शासक। 34- ohj jktk jke&किसानों का सच्चा हितेषी, गुरिल्ला युद्ध में माहिर, बलिष्ठ व चरित्रवान यूवा जाट सरदार जिसने मुगलों के खजानों को लूटा। 35- jke dh pkgj&किसानों का हितैषी, गुरिल्ला युद्ध में निपुण तथा महा पराक्रमी जाट सैनापति जिसने मुगलों के खजाने लूटे। 36- pk- mnehjke ljkgk&प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का क्रान्तिकारी तथा अंग्रेजों के अत्याचारों का विरोध करने वाला युवक। 37- lwcsnkj fjNiky jke&भारतीय फौज के गौरव जिसने 2 बार विक्टोरिया क्रास जीता जो कि किसी भारतीय ने आज तक नहीं जीता। 38- Lokeh ds'kokuUn& महान समाज सुधारक, समाज तथा राष्ट्र के प्रति सर्मपण, त्याग, तपस्या, करूणा तथा कर्मनिष्ठा के कारण स्वामी केशवानन्द युगपुरूष कहलाये। 39- pk- dcy flag&जाट जाति के महान व्यक्ति जिन्होने पंचायत के गौरवशाली इतिहास की रक्षा की। 40- vkpk;Z txnso flag fl)kUrh& प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान जिन्होंने आर्य समाज के आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर भाग लिया तथा सांसद भी रहे। 41- Bkdqj ns'k jkt&शेखावटी किसान आन्दोलन को प्रेरणा देने वाले जाटों को संगठित करने तथा जाट इतिहास लिखने वाले। 42-dSIVu nyhi flag vgykor&भारतीय सेना से सेवानिवृत तथा जाट वीरों का इतिहास के लेखक। 43- pk- gjQwy tkV&हरियाणा के महान गौभक्त व वीर क्रांतिकारी। 44-HkDr Qwy flag&हरियाणा के महान

शिक्षा शास्त्री, नारी शिक्षा के प्रचारक, समाज सुधारक वैदिक धर्म के अनुयायी। 45- pk- p:rh yky oek&प्रसिद्ध उद्योगपति, समाज सेवी व दानवीर जाट हस्ती। 46- ckck ukFkjke fe/kk&मारवाड़ा की किसान–क्रान्ति के महान नायक व राजस्थान के कुशल राजनीतिक नेता, सांसद व मंत्री। 47- pk- dEHkk jke vk;&सामाजिक व आर्थिक क्रान्ति के समर्थक तथा अन्याय के प्रबल विरोधी राजस्थान के जुझारू आर्यसमाजी राजनेता तथा किसानों के पक्षधर। 48- jktk n;kjke&हाथरस रियासत के जाट राजा जो परम देशभक्त तथा महान क्रान्तिकारी थे। 49- egkjktk Jh Ñ".k flg&भरतपुर रियासत के जाट राजा जो परम देशभक्त व समाज सुधारक थे इन्हें जाट होने पर बहुत गर्व था। 50-egkjktk ehjUn flg tno&जाट शक्ति के प्रेरणा स्त्रोत, हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान महान कवि तथा साहित्याकार थे। 51- jktk j?kohj flg&जींद रियासत के उदार, योग्य और प्रतिभाशाली प्रशासक। 52- egkjktk o`tUn flg&भरतपुर (लोहागढ़) रियासत के अन्तिम शासक, धर्म तथा संस्कृति के रक्षक, कुशल राजनीतिज्ञ व सुयोग्य शासक। 53- jktk eku flg&राजा मान सिंह राजस्थान से सम्बन्ध रखते थे तथा स्वभाव से स्वाभिमानी, निर्भीक और सच्चे किसान थे वे जाट सभाओं में जाना गौरव की बात मानते थे। 54- pk- ohjUn flg oek&पश्चिमी उत्तर प्रदेश के युग पुरूष, प्रखर देश भक्त मथा हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल। 55- pk/kjh fVdk jke&हरियाणा में शिक्षा क्रान्ति के अग्रदूत व संयुक्त पंजाब के पूर्व मंत्री। 56- pk- cgknj flg&ग्रामोथान विद्यापीठ, संगरिया के संस्थापक। 57- ckc xYyk jke pk/kjh&मारवाड में शिक्षा क्रान्ति के अग्रदूत व समाज सेवी। 58- pk- [ke yky jkBh&हरियाणा में जन्में, धर्म पालक और कुशल प्रशासक। 59- dIVu Hkxoku flg pkgj&आगरा जनपद में जन्में तथा कैप्टन, कमीशनर, राजदूत तथा डाक्टर की मानक उपाधि प्राप्त कर जाट भावना से ओत प्रोत बहुआयामी व्यक्तित्व। 60- tfLVl egkohj flg&अर्थशास्त्र के प्रवक्ता रहे, इलाहाबाद उच्च न्यायलय में न्यायधीश रहे, महाराजा सुरजमल शिक्षण संस्थान में महत्वपूर्ण योगदान तथा 1983 में सर्वखाप पंचायत के अध्यक्ष बने। 61- ohj jk;ly [kk[kj&महावीर, परम साहसी योद्धा जिसने मोहमद गजनी को घेरकर मार गिराया था। 62- lr gjh nkl&जाट समाज के धर्मात्मा, दानवीर व ईश्वर भक्त सत। 63- lr xxknkl&हिन्दी साहित्या में राष्ट्रीय भावना और स्वतन्त्रता का बिगुल बजाने वाले खड़ी बोली के प्रथम समर्थ कवि। 64-Mkå vkeiky flg ^rxkfu;k*&एम. ए., पी.एच.डी. (शिक्षा शास्त्र), जाट साहित्य के प्रसिद्ध लेखक। 65- pkå j?kohj flg&शास्त्री–प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता तथा भूतपूर्व संसद सदस्य। 66- çkå x.kir flg dloj& समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र के प्रसिद्ध लेखक, जिला जाट सभा महासम्मेलन के प्रभारी। 67- dEiuh goynkj eitj pgyjke&भारतीय सेना से विक्टोरिया क्रास से सम्मानित। 68- egkjktk jk.kk mn;Hkku flg&धोलपुर के शासक, तपस्वी और धर्म निष्ट नरेश थें और अपने सदगुणों और सदचरित्र के कारण भारत भर में प्रसिद्ध थे। 69-pkåjkenku th ckMej&शिक्षा एवं किसान को समर्पित समाज सेवी। 70- ykdnork ohj fcXxk th&महावीर, गौरक्षा के लिए बलिदान देने वाले, जाखड़ों के कुल के देवता। 71- jktk vux iky&दिल्ली के अन्तिम तोमर शासक एक कुशल प्रशासक। 72- ljnkj >q>k ohj&वीर पराक्रमी जिसके नाम पर राजस्थान का झूंझनू शहर बसा। 73- jktk fot; jko&भटिण्डा क्षेत्र के राजा जिन्होंनें एक बार गजनी को लूटकर नंगा कर दिया था। 74- egkjktk cnu flg&भरतपुर रियासत के प्रथम राजा जिन्होंने रियासत को पूर्ण रूप देकर इसकी सीमाओं का विस्तार किया। 75 - jktk tk/kk flg& कोटकपुरा (पंजाब) रियासत के संस्थापक राजा। 76- ohj ;k)k ine flg tkV& आई.एन.ए. में वीरता की सबसे बड़ी उपाधि वीर–ए–हिंद जितने वाला एक मात्र हिन्दू। 77- ohj ;k)k jke flg [kktk&टोंक रियासत (राजस्थान) के शासक जिनके नाम पर टोंक शहर की स्थापना हुई। 78- jktk ohjHkn&भारत के प्रथम जाट राजा जिन्होंने हरिद्वार पर राज किया। 79- Lokeh fu'py nkl nfg;k&वैदिक धर्म की व्याख्या पर विचार सागर ग्रंथ लिखा। 80- ohj ljtçdk'k tkV ¼nfg;k½&महाराक्रमी सेनापति जिसने तुर्को को करनाल में हराया। 81- jktk ljdV flg&शेखपुर (पंजाब) के जाट राजा जो लड़ाई में दुश्मन का सिर काटने में माहिर थे। 82- ohj 'kghn gjchj xfy;k& वीर जाट योद्धा जिसने तैमूरलंग को घायल किया तथा वीरतापूर्ण लड़ते हुए शहीद हुए। 83- ljnkj cvUr flg& पंजाब के पूर्व मुख्यामंत्री, कठोर प्रशासक जिन्होंने पंजाब में आंतकवाद के खात्में के लिए सार्थक कदम उठाये। 84- vej 'kghn ykV&प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के स्तम्भ, वीर क्रान्तिकारी, क्रान्तिकारियों के संगठनकर्ता। 85- tkV egkjkuh rkefjl& तोमरिस जाट महारानी की धार्मिकता, सहनशीलता, वीरता तथा देशभक्ति अद्वितीय थी ऐसे उदाहरण संसार के स्त्री इतिहास में कम ही मिलते हैं। 86- tkV ohjkxuk 'kytk& खून का बदला लेने वाली कठोगोत्रिया जिसने सिंकदर के अत्याचारी सेनापति फिलिप्स को मारा। 87- jktdekjh lkek nloh pkgj&शोर्य और साहस की प्रतीक जिसने 13वीं शताब्दी के गुलाम बंश के अत्याचारी सैनिकों को गाजर मूली की तरह युद्ध में काटा। 88- egkjkuh fd'kkjh& रानी किशारी एक ऐसी नारी थी जो विपतियों से भी नहीं घबराती थी जिसनें अपने यशस्वी पति महाराजा सूरजमल की अर्धांगिनी के रूप में विशिष्ट कीर्तिमान स्थापित किये। 89- egkjkuh fxjjkt dkj&भरतपुर के महाराज राम सिंह के देहान्त के पश्चात अपने राज्य का कार्यभार सुझबुझ से चलाया तथा निपुण शासिका सिद्ध हुई। 90- f'konoh tkVuh&अंग्रेजों से लोहा लेने वाली वीरंगनी जाटनी जिसने अपने साथियों के सहयोग से 17 अंग्रेज मारे थे। 91- 'kghn Hkoj dkj&वृज क्षेत्र की अमर शहीद जिसने अपनी सहेलियों के सहयोग से कईं मुगल सैनिकों को मारा। 92- ohjkxuk lekdkj& मलिक जाटों की बेटी तथा अहलावात जाटों की बहु जो कलानौर के नवाब और उसके परिवार के अन्नत का कारण बनी। 93- chch lkfgc dkj&सरदार जाट गुलाब सिंह की पुत्री जिसने राजगढ़ के मैदान में मराठों को लड़ाई में धूल चटाई थी। 94- 'kghn ik;yV 'kQkyh&भारतीय वायुसेना में शोर्य चक्र प्राप्त करने वाली प्रथम महिला। 95- dIVu leu lkxoku&प्रथम वर्दीधारी महिला उच्च अधिकारी जो माउन्ट ऐवरेस्ट पर चढ़ी। 96- lrh f'kjke.kh jkukckbl&निडर, प्रभुभक्त तथा आजीवन ब्रह्मचारिणी रहने वाली। 97- jkuh j?kohj dkj &बल्लबगढ़ राज्य की दीपशिखा, जाटों में देश भक्ति की प्रेरक रानी रघुवीर कौर राजनीतिज्ञ व निपुण प्रशासक थी। 98- HkDr f'kjke.kh djekckbl&ईश्वर की भक्ति में अगाध विश्वास रखने वाली। 99- lr f'kjke.kh Qyh ckbl&फूली बाई नारी संतों में एक प्रमुख सन्त थी जो आत्मबल व निश्चय की पक्की थी जिसने आजीवन कुवारी रहकर पूरा जीवन ईश्वर भक्ति में व्यतीत कर दिया। 100- pkå jkeyky gkyk&जाट इतिहासकार व अ.भा.ज. महासभा के संस्थापक सवस्य। 101- lukifr dhrhey&राणा सांगां का मुख्य सेनापति जो राणा सांगा को घायल अवस्था में युद्ध भूमि से खींच कर लाया तथा युद्ध भूमि में शहीद हुआ।

दुर्भाग्य में कोई किसी का साथी नहीं होता। देखिए, मरते समय मनुष्य की आंख भी फिर जाती है। – अज्ञात

इस प्रकार जाट जाति के उपरोक्त 101 महापुरूष ऐसे है जिन्होंने अपने विभिन्न क्षेत्रों में प्रशसनीय कार्य करके जाट जाति के गौरव को चार चांद लगाये। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में भी अनेक जाट महापुरूष अनेक क्षेत्रों में प्रतिभाशाली व प्रंशसनीय कार्य करके समाज व देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं तथा इसके साथ–साथ जाट जाति के उत्थान व विकास के लिए भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। वर्तमान समय के 51 जाट गौरवों का सक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है जिन्होंने अपने कार्य से जाट समाज का मान बढ़ाया है।

1- pkå HkiUn flg gMk& भूतपूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा, मधुर भाषी, कुशल राजनीतिज्ञ, जाट आरक्षण में विशेष योगदान। 2- pkå vftr flg rofr;k& पूर्व केन्द्रीय मंत्री, अध्यक्ष रा० लोकदल, जाट आरक्षण में योगदान। 3- Mk- cyjke tk[kM& पूर्व केन्द्रीय मंत्री व राज्यपाल, जाट आरक्षण में विशेष सहयोग। 4- dSIVu vefjUn flg&पूर्व मुख्यमंत्री पंजाब, अध्यक्ष अखिल भारतीय जाट महासभा, जाट आरक्षण में विशेष योगदान। 5- Jherh j.kdk pk/kjh&पूर्व केन्द्रीय मंत्री केन्द्रीय मंत्री जाट आरक्षण में विशेष योगदान। 6- Mkå Kku çdk'k fiykfu;k& राज्य सभा सांसद, जाट आरक्षण में योगदान। 7- pkå gok flg lkxoku&पूर्व कमाडेन्ट जाट आरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान तथा संघर्ष समिति के अध्यक्ष। 8- ;'kiky efyd& जाट आरक्षण के आन्दोलन में सक्रिय भागेदारी। 9 pkå ;)ohj flg&राष्ट्रीय महासचिव, अखिल भारतीय जाट महासभा तथा जाट आरक्षण के लिए जाट राजनेताओं को एक मंच पर लाने में अहम भूमिका निभाने वाले। 10 . pk vke çdk'k pkVkyk& पूर्व मुख्यामंत्री हरियाणा, कुशल प्रशासक व मेहनती नेता। 11- l- çdk'k flg ckny&मुख्यमंत्री पंजाब, जट्–जाट एकता के प्रतीक। 12- Jherh clU/kjk jkt&मुख्यमंत्री राजस्थान, कुशल प्रशासक व जाटों की बहु। 13- pk- ohjUn flg&राज्यसभा सांसद, पूर्व मंत्री हरियाणा, जाट आरक्षण के समर्थक। 14- tfLVl noh flg&पूर्व न्यायधीश व जाट आरक्षण के संघर्ष में योगदान। 15- duy ,e-,l- nfg;k&भारतीय सेना से सेवानिवृति, शोर्यचक्र प्राप्त जाटों के विकास के लिए गए कार्यरत। 16- çk- t-d- xgyokr&जाट ज्योति पत्रिका के सम्पादक व जाटों में सामाजिक तथा कोमी एकता लाने के लिए प्रयासरत। 17- pk- vt; flg pkgj& पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा विभिन्न जाट संगठनों के अध्यक्ष। 18- Jh tlchj efyd&'जाट रत्न' पत्रिका के सम्पादक तथा पत्रिका के माध्यम से जाटों में जागरूकता लाने के लिए प्रंशसनीय। 19- pk- jktUn flg Qktnkj& 'जाट समाज' पत्रिका का सम्पादन जो जाटों के उत्थान के लए पत्रिका के माध्यम से अच्छा कार्य कर रहे हैं। 20- pk- jktkjke ehy&राजस्थान जाट महासभा के अध्यक्ष जो समाज हित में कार्य कर रहे हैं। 21- pk- uQs flg uu& जाट आरक्षण आन्दोलनों में बढ़चढ़कर भाग लिया तथा खापों को जाट आरक्षण आन्दोलनों से जोड़ा। 22- çk- ekepUn fo/kky dkj&जाट इतिहास के प्रसिद्ध, लेखक, समीक्षक तथा महाविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर। 23- çk- iek jke&राजस्थान के जाटों के इतिहास के प्रसिद्ध लेखक। 24- Mk- l[kchj flg nyky&जाट साहित्य, धर्म, संस्कृति के प्रसिद्ध लेखक। 25- pk- efgiky vk;Z ¼ifu;k½& जाट साहित्या के अच्छे लेखक व समीक्षक तथा वैदिक धर्म के अनुयायी। 26- pk- Mk- ch-,l- cfy;ku& जाट/जट वशंवली व गोत्रावली के प्रसिद्ध लेखक। 27- pk- Hkys jke cfy;ku&जाट इतिहास के प्रसिद्ध लेखक व राष्ट्रीय जाट महासंघ के अध्यक्ष। 28- doj uVoj flg&पूर्व केन्द्रीय विदेश मंत्री व महाराजा सुरजमल पुस्तक के लेखक व कुशल राजनीतिज्ञ। 29- pk- lkeiky 'kL=h& पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री, किसान हितेषी तथा सिद्धांतों की राजनीति करने वाले नेता। 30- pk- gDe flg& हरियाणा के पूर्व मुख्यामंत्री व जाट उत्थान के सहयोगी। 31- pk- vVy flg [kk[kj&जाटों की उत्पति एव कवस्तार पुस्तक के लेखक। 32- Jh lt; jkBh & पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रंशसनीय कार्य कर रहे हैं। 33- pkå gjukjk;.k ekyh&मध्य प्रदेश जाट सभा व अन्य जाट संगठनों में सक्रिय योगदान। 34- Mk- ,-d- pk/kjh& धार (म०प्र०) के सुप्रिद्ध चिकित्सक, जाट कल्याण के कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। 35- pkå vke çdk'k eku& प्रदेश अध्यक्ष (हरियाणा) अखिल भारतीय जाट महासभा जो हरियाणा के जाट समाज व खापों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहें हैं। 36- pkå /ku flg lgjkor& प्रदेश अध्यक्ष (महाराष्ट्र) अखिल भारतीय जाट महासभा महाराष्ट्र एवं महाराष्ट्र में जाट आरक्षण लागु करवाने के लिए संघर्षरत। 37- pkå jke ukjk;.k pkekjh & प्रदेश अध्यक्ष (राजस्थान) आदर्श जाट महासभा। 38- çkå ?kklh jke pk/kjh& जन जागृति के अग्रदुत जिन्होंने अनेक समाज सेवी संस्थाओं को आर्थिक सहयोग दिया। 39- yQfVuUV tjuy Mh-,l- lgkx& भारतीय सेना के रक्षा अधिकारी जो अपने अनुशासन एवं वीरता के लिए जाने जाते हैं। 40- /keZUn flg n;ky& सुप्रसिद्ध अभिनेता, अच्छे इन्सान तथा जिन्हें जाट होने पर गर्व है। 41- Jherh deyk cfuoky& राज्यपाल गुजरात, जाट समाज को सम्मानित राजनीतिज्ञ। 42- Jh Mkyk jke [kktk& 'जाट परिवेश' पत्रिका के सम्पादक, अच्छे इन्सान जो पत्रिका के माध्यम से जाट समाज में जागरूकता पैदा कर रहे है। 43- pkå egUn iky pkekjh& पूर्व प्रधानमंत्री फिजी, जो जाट संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। 44- pkå lYrku flg& पूर्व राज्यपाल त्रिपुरा, जो जाट समाज के सम्मानित व्यक्ति है। 45- pkå dey flg& अध्यक्ष जाट कल्याण सभा जम्मू, जाट सम्मेलनों के आयोजक। 46- pkå ohjUn lgokx & भारतीय क्रिकेट टीम के प्रतिभाशाली, विस्फोटक बल्लेबाज, जाट खिलाड़ी। 47- lå uotkr flg fl)& प्रसिद्ध क्रिकेटर, पूर्व सांसद सदस्य, अभिनेता व कमेन्टेटर। 48- pkå egUn flg efyd& पूर्व डी.जी.पी., अध्यक्ष जाट सभा चण्डीगढ़ व अच्छे लेखक व अच्छे वक्ता। 49- vkpk;Z cynso& प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान, समाज सुधारक व नेक दिल इन्सान। 50- pkå l'khy dekj& प्रसिद्ध पहलवान, ओलम्पिक के रजत पदक विजेता। 51- pkå fotUn cfuoky& प्रसिद्ध बाक्सर, जिन्होनें कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल जीता। 52- pkå ujUn flg vk;Z& प्रदेश अध्यक्ष (देहली) आदर्श जाट महासभा, सामाजिक व चरित्रवान, जाट अधिवेशनों में सक्रिय भागेदारी। 53- duy vk-ih- flU/kk& भारतीय सेना से सेवानिवृत रक्षा अधिकारी, जाट आरक्षण के संघर्ष में महत्त्वपूर्ण योगदान।

इस प्रकार मैंने अपने विवेक से कुल 101+51 = 152 जाट महापुरूषों का चयन किया है। जिन्होंनें जाट जाति के मान सम्मान के लिए कार्य करते हुए जाट जाति का गौरव बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त जाट जाति में और भी कईं प्रसिद्ध व लोकप्रिय महापुरूष हुए हैं जिन्होंनें कई क्षेत्रों में प्रशसनीय कार्य किया है परन्तु यहां पर उन 152 महाहस्तीयों का चयन करने का प्रयास किया गया है जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के साथ–साथ जाट समाज के विकास के लिए भी सहयोग दिया है तथा जाट जाति के मान सम्मान के लिए संघर्ष किया है।

"I WISH YOU ENOUGH"

Recently, I overheard a mother and daughter in their last moments together at the airport as the daughter's departure had been announced. Standing near the security gate, they hugged and the mother said:
"I love you and I wish you enough."

The daughter replied, "Mom, our life together has been more than enough. Your love is all I ever needed. I wish you enough, too, Mom." They kissed and the daughter left.

The mother walked over to the window where I sat. Standing there, I could see she wanted and needed to cry.

I tried not to intrude on her privacy but she welcomed me in by asking, "Did you ever say good-bye to someone knowing it would be forever?" "Yes, I have," I replied. "Forgive me for asking but why is this a forever good-bye?"
"I am old and she lives so far away. I have challenges ahead and the reality is the next trip back will be for my funeral," she said.

When you were saying good-bye, I heard you say, "I wish you enough." May I ask what that means?"

She began to smile. "That's a wish that has been handed down from other generations. My parents used to say it to everyone." She paused a moment and looked up as if trying to remember it in detail and she smiled even more.

"When we said 'I wish you enough' we were wanting the other person to have a life filled with just enough good things to sustain them". Then turning toward me, she shared the following, reciting it from memory,

"I wish you enough sun to keep your attitude bright.
I wish you enough rain to appreciate the sun more.
I wish you enough happiness to keep your spirit alive.
I wish you enough pain so that the smallest joys in life appear much bigger.
I wish you enough gain to satisfy your wanting.
I wish you enough loss to appreciate all that you possess.
I wish you enough hellos to get you through the final good-bye."

She then began to cry and walked away.

They say it takes a minute to find a special person. An hour to appreciate them. A day to love them. And an entire life to forget them. Please Share this with your friends. It has the potential to inspire a lot of people.

RAHUL BERWAL

डिजिटल किसान

डॉ प्रताप सिंह पंवार

डिजिटल किसान का अभिप्राय, किसान द्वारा खेती तथा पशुपालन बारे बाजार सहित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी ऑनलाइन संचालन से प्राप्त करके, स्वय को अंतर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ने है। मैंने अपनी टीम, जिसमे श्रीमती विनीता पंवार (पत्नी), विश्वजीत सिंह पंवार व सर्वजीत पंवार (दोनों बेटे), से कहा कि मुझे डिजिटल इण्डिया शीर्षक पर लेख लिखना है और डिजिटल प्रक्रिया के माध्यम से किसान को अंतर्राष्ट्रीय बाजार से तत्काल जोड़ना का सुझाव भी देना है। मेरी टीम द्वारा उपरोक्त डिजिटल किसान शीर्षक को अंतिम रूप देते ही विवरण को मैंने निम्न प्रकार संकलित किया ।

डिजिटल किसान दो शब्दों का ही वाक्य है। इस वाक्य का जिक्र करते ही किसान कहता है कि डिजिटल होने से पहले मुझे तो सशक्त बनना है। इसके लिए खेत का आकार बड़ा होना अनिवार्य है। खाद्य व कृ ा नीतियों के विश्लेषकों की भावना के अनुरूप तथ्य है कि सरकारी नीतियों में कृषि की अनदेखी की जाती है और कृषि भारत के आर्थिक राडार से गायब हो गई है। 70 प्रतिशत किसानों के पास एक हेक्टेयर से कम भूमि है और 40 प्रतिशत से अधिक किसान मनरेगा जॉब कार्ड धारक है अर्थात पिछले कुछ वर्षों में खेती –किसानी किस तरह घाटे का सौदा बन गई है। तकनीकी विकास के नाम पर अंधाधुंध तरीके से झोंकी गई गहन कृषि तकनीके किसानों के जीवन में खुशहाली नही ला सकी है। गेहूँ और चावल के समर्थन मूल्य में प्रत्येक वर्ष वृद्धि न के बराबर है।

अनेक अर्थशास्त्रीयों सहित रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री रघु राम राजन की इस भावना से लेखक सहमत नही है कि भारत में असली प्रगति तब होगी जब हम लोगो को कृ ा से बाहर निकालकर ाहरों में लाने में सफल होंगे। अब तक हमने समस्या पर ही उपरोक्त चर्चा की है।

समाधान की प्रक्रिया में डिजिटल किसान का विकल्प बन सकता है। इसके लिए सबसे पहले किसान को अपनी – अपनी खेती को एक जगह मिलाकर समूह में या तो स्वयं बोयें या फिर पंजीकृत उत्पादक कम्पनियों को पाँच अथवा दस व ाों के ठेके पर देने पर गौर करें।

डॉ स्वामीनाथन की संस्तुति (दिसंबर 2004 से अक्टूबर 2006 की अवधि में जमा प्रथम चार रिपोर्ट के आधार पर प्रस्तुत पांचवीं रिपोर्ट) के अनुरूप किसान की फसल के लिए निर्धारित मूल्य कृषि उत्पादन में खर्च औसत लागत से 50 प्रतिशत अधिक एम० एस० पी० की दर पर प्राप्त होना, आज तक भी लागू नही हुआ है।

इस रिपोर्ट के लागू होने पर पशुपालक को यह भी अनुमति रहेगी कि वह प्रत्येक सीजन में कामन प्रोपर्टी रिसोर्स की फोरेस्ट भूमि पर अपने पशु चरा सकेगा। सविंधान की कंकरंट सूचि में कृषि को शामिल रखने का सुझाव भी इस रिपोर्ट में है। इंटरनेट सीखने पर ही किसान उपरोक्त सभी जानकारी से स्वय अधतन हो सकेगा।

माननीय श्री मनोहर लाल खटटर, मुख्य मंत्री ,हरियाणा के प्रयासों से प्रदेश में भूमि की रजिस्ट्री ऑनलाइन हो गई है। इससे भ्रष्टाचार खत्म होगा और किसान के पास कितने एकड़ भूमि है , यह जानकारी भी यूरिया खाद वितरण में किसान के लिए उपयोगी साबित होगी अर्थात यूरिया खाद का ब्लैक नही हो सकेगा। ऑनलाइन यूरिया खाद सीधे किसान के खेत पर पहुंचेगा। किसान को मोबाईल की तरह डिजिटल होने के लिए सबसे पहले इंटरनेट सीखना ही पड़ेगा। इंटरनेट पर आप विभिन्न अखबार मुफ्त में ही पढ़ कर स्मार्ट किसान बन सकते है।

इंटरनेट से कृ ा सूचनाये प्राप्त करके किसान स्वयं को इसलिए बुलन्द महसूस करेगा, क्योंकि आने वाले समय में खाद्य पदार्थों व पशु उत्पाद सहित देशी गाय के टाइप ए –2 दूध से बना देशी घी भी किसान ऑनलाइन आर्डर करके मँगवा सकेगा। यूरिया खाद, बीज, पशु, पुस्तकें, कपड़ा, जूता, कृ ा यन्त्र, अंतर्राष्ट्रीय अनाज मंडियों के स्थान व रोजाना पल –पल के क्रय –विक्रय भाव , मोटर साईकल ,

ट्रैक्टर , शिक्षा व विवाह संबंधी तथा जीवन में सभी प्रकार की जानकारी व घर बैठे विभिन्न सुविधाये जैसे बिल भरना , अदालती कार्यवाहियां , टिकट व गैस बुक करना आदि – आदि सभी इंटरनेट सीखते ही आपके साथ जीवन भर रहेंगी।

इंटरनेट सीखने पर किसान स्वय अमेरिका सहित विभिन्न देशों के वैज्ञानिक व प्रगतिशील किसान से खेती व पशुपालन बारे सलाह हेतु स्काइप व ईमेल से आदान –प्रदान भी कर सकेगा। जैसे थाईलैंड के एक गरीब पशुपालक ने अपने वैज्ञानिक मित्र Dr DEREK EMMERSON के माध्यम से भारत में कार्यरत डॉ प्रताप सिंह पँवार को ईमेल करके दिनाँक 07 –01 –2015 को यह सलाह मांगी कि थाई भैंस का प्रजनन कौन से सांड भैंसे से कराया जाये, जिससे उस किसान को भैंस का माँस व दूध दोनों बेच कर लाभ भी प्राप्त हो सके। इसके प्रत्युत्तर में वैज्ञानिकों से चर्चा उपरान्त ईमेल से सलाह प्रे ित कर डॉ प्रताप सिंह पंवार ने विदेशी वैज्ञानिक से धन्यवाद भी प्राप्त किया। इंटरनेट सीखने पर इस तरह का आदान –प्रदान स्वय किसान आसानी से कर सकेगा।

गौरतलब है कि आप सुप्रीम कोर्ट में ऑनलाइन अपील लगभग मुफ्त के खर्चे के बराबर स्वय फाइल कर सकते है। दूसरा, साठ हजार से कम वार्षिक आय वाला व्यक्ति भी मात्र 10 हजार रुपये में सुप्रीम कोर्ट के वकीलों की बनी सोसायटी के माध्यम से ऑनलाइन अपील दायर कर सकता है। तीन वकीलों में से आप अपनी पसंद के वकील के नाम पर क्लिक भी कर सकेंगे। ऑनलाइन पेपर भेजने के बाद अगर मामले को वकीलों ने अपील लायक नही समझा तो आपके मात्र 750 रुपये रख, शेष चेक द्वारा वापिस कर दिए जायेंगे। समाज के गरीबों को इस तरह की ऑनलाइन जानकारी देकर स्वय आनन्द व शान्ति महसूस करे।

भारतीय संसद में प्रश्नकाल के दौरान विभिन्न तारीखों को किसानों के विषय पर कब, किसके द्वारा, क्या कहा है, संसद की राज्य सभा व लोकसभा वेबसाइट पर मात्र कुछ भी एक शब्द लिखने पर सम्पूर्ण जानकारी किसान स्वय देख व समझ कर अपने कार्य को गतिशील रख सकता है। जैसे आपने Milk लिखा तो Milk के बारे सम्पूर्ण प्रश्नकाल की उत्तर सहित जानकारी आप देख सकेंगे।

डिजिटल कृषि मार्किटिंग, लॉजिस्टिक प्रोडक्ट डिलिवरी में अवसर, क्वालिटी टेस्टिंग, ब्रांड प्रबंधन, मर्कैडाइज प्लानर जिसमे रिटेल स्टोर की ट्रैकिंग, मार्किट रिसर्च करने से लेकर कस्टमर, मार्कटिंग और परचेज डिपार्टमेंट के बीच सामजस्य बैठाने का सारा दारोमदार एक्सपर्ट मर्कैडाइज पर होगा।

निम्न पाठ्यक्रम अनुसार किसान इंटरनेट सीखना आरम्भ कर सकते है। 1990 के बाद जन्मे 60 प्रतिशत आपके ही बच्चे इस महान कार्य में आपको सहयोग कर सकते है। पाठ्यक्रम सहित इंटरनेट की सुविधा अब जाट भवन, करनाल, में भी उपलब्ध हो गई है। तत्काल विभिन्न जानकारियों से लाभान्वित हो कर स्वय को बुलन्द करे। इंटरनेट से प्राप्त जानकारी व प्रणाली की चर्चा समाज में करके आप सर छोटू राम का सपना भी साकार कर सकेंगे। मात्र इंटरनेट सीख कर कम शिक्षित व्यक्ति भी बगैर इंटरनेट सीखे डिग्रीधारिओं को भी पछाड़ देगा।

सभी वर्ग के लोगो को सप्ताह में एक घण्टा इंटरनेट सीखा कर नोलज ग्रिड से जोड़कर अनुशासन, नैतिकता, जवाबदेही व स्वाभिमान से शीघ्र परिचय करा सकते है।

यह कार्य बगैर खर्चे का है, स्पष्ट है, निरंतर रहने वाला है, लोगो को शासन की जटिल प्रक्रियाओं से अवगत करवाकर, विभिन्न क्षेत्र के रोजगार बता कर, आधुनिक विभिन्न कौशल के नोलज से भी बुलन्द करेगा।

ऑनलाइन कम्प्यूटर पर प्रारम्भिक प्रशिक्षण की श्रृंखला में विभिन्न यूनिट निम्न प्रस्तावित है : –प्रथम यूनिट

1) कम्प्यूटर प्रणाली को आन आफ करना।
2) माउस की सहायता से कर्सर मूव करना।
3) क्रोम अथवा मोजिला में गूगल बॉक्स ओपन करना।
4) समाचार पत्र ओपन करके पढ़ना।

n|jh ;fuV

1) हिन्दी टंकण के लिए वर्ड फाइल ओपन करके उसका नामकरण व ऐछिक ड्राइव में सेव करना।
2) गूगल बॉक्स में Hindi Transliteration लिख कर टाइप बॉक्स में हिंदी में टंकण करना और टंकित शब्दों की लाइन को कापी करके वर्ड फाइल में पेस्ट करना।
3) पेस्ट के बाद अगर डब्बे बनने पर यूनिकोड फॉन्ट को अप्लाई करके सेव भी करना ।

rh|jh ;fuV

1) एक पत्र व प्रेस नोट को विभिन्न पत्तों पर प्रे ित करना।
2) ईमेल अकाऊँट बना कर सम्प्रेषण की प्रक्रिया को सीखना।
3) प्रिन्ट की प्रक्रिया सीखना।
4) वर्ड फाइल को पीडीएफ में बदल कर ईमेल में अटैच करना।

जाट भवन की शिक्षा समिति के मार्गदर्शन में सप्ताह में निर्धारित एक घण्टा उपरोक्त प्रशिक्षण के लिए, करनाल जिले के चिन्हित किये गए गावों में, उक्त गावों के इछुक प्रशिक्षुओं की सहमति अनुरूप, शिक्षा समिति की टीम उपलब्ध रहे ।

इंटरनेट सीख कर किसान अपने अनेक फिजूल व अधिक खर्चों पर स्वय विराम देकर जीवन को स्मार्ट अवश्य बना लेगा। अपने देश के मोबाईल सीखे हुए किसान की बौद्धिकता पर लेखक को अधिक भरोसा है।

लर्न स्वच्छ इंटरनेट एंड गेट जॉब ओरएंटिड स्किल (LSI G JOS)।

fMftVy toku fMftVy fdlku AA

मूल्यवान क्या है ?

& lr;kuUn vk;

किसी धनी भक्त ने एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस को एक कीमती दुशाला भेंट किया। स्वामी जी ऐसी वस्तुओं के शौकीन नहीं थे, परन्तु भक्त के आग्रह पर उन्होंने स्वीकार कर लिया। उसे वे प्रायः साधारण कम्बल की भान्ति बिछा लेते, कभी ओढ़ लेते। दुशाले का यह दुरूपयोग एक सज्जन को बहुत बुरा लगा। उन्होंने स्वामी जी से कहा, "यह तो बड़ा मूल्यवान दुशाला है। इसका प्रयोग भी सावधानीपूर्वक करना चाहियें। इस प्रकार तो यह जल्दी फट जाएगा।" परमहंस ने सहजभाव से उत्तर दिया, "जब सभी प्रकार की ममता छोड़ दी है तो दुशाले से कैसी ममता? क्या आप चाहते हैं कि मै। अपना मन भगवान से हटा कर इस तुच्छ वस्तु की ओर लगाऊँ ? किसी छोटी सी वस्तु के लिए एक बहुत बड़ी वस्तु गवां देना कोई बुद्धिमानी है ? यह कहकर उन्होंने दुशाले के एक कोने को तुरन्त आग से जला दिया और उस सज्जन से कहा, "लीजिए, अब न जो यह मूल्यवान रहा, न सुन्दर। अब कभी भी मेरे मन में इसे संभालने की चिता पैदा नहीं होगी और मैं सारा ध्यान भगवान की ओर लगा सकूंगा।" वे सज्जन निरूतर हाकर वापस चले गए। परमहंस ने भक्तों को समझाया कि सांसारिक वस्तुओं से ममता व मोह जितना कम हो, सुखी जीवन के लिए उतना ही निकट पहुंचा जा सकता है।

कर्त्तव्य पालन ही चित की शांति का मूल्य मंत्र है। – प्रेमचन्द

जघन्य अपराध है–कन्या भ्रूण हत्या

HkjpUn tSu] ckMesj

सदियों से भारत की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक, औद्योगिक, राजनैतिक आदि व्यवस्थाओं में कन्याओं (बालिकाओं) की किसी न किसी स्वरूप में भूमिका रही है। परन्तु पुरूष समाज में अपनी प्रधानता समझते हुए सदैव कन्याओं की घोर उपेक्षा ही नहीं की अपितु अपने स्वार्थ एवं मजबूरियों के कारण कन्या का जन्म से गला घोट कर हत्या करने का अपराध किया है। इसका इतिहास साक्षी है। कई समाज में तो कन्या के जन्म लेते ही उसे किसी न किसी रूप में मार दिया जाता है। इसके पीछे केवल उस समाज अथवा परिवार की सोच आर्थिक पहलू रहता था। शादी पर अधिकाधिक खर्च सताता था तो दहेज देने की विवशता बाधा बनी रहती थी। सम्पति में भागीदारी झकझोर देती थी। मरने पर मुखग्नि देने की बात रहती थी। वंश को आगे चलाने की भावना प्रमुख रूप से मनुष्य के दिल और दिमाग में छाई रहती थी। बस यही वे प्रमुख कारण रहे होंगे जो कन्या हत्या के लिए प्रचलित रहे हैं। जिसके कारण समाज पुरूष प्रधान बन कर कन्याओं को अभिशाप समझता रहा और सदैव कन्या के जन्म को अपना दुर्भाग्या मानता रहा।

परिवार में एक तरफ कन्या को बोझ समझा जाता है वहां समाज में भारतीय संस्कृति में बिना कन्या के हमारे पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक आदि कार्यक्रमों में उसकी भागीदारी को उत्तम समझा जाता है। जन्मोत्सव पर बधाई कन्या देती है। बच्चे का नामाकरण का हक कन्या को मिला है। दुल्हे के शादी पर जाने से पहले कन्या घोड़े की लगाम थामकर भाई के सुखद जीवन की कामना करती है। शादी के बाद चिराऊ की आरती कन्या उतारती है। धार्मिक तीज त्यौंहार तो बिना कन्याओं के अध ूरे ही नहीं लगते अपितु अपशुगुनी मानते है। दानपुण्य की जब चर्चा होती है तो कुंवारी कन्याओं को जीमाना भाग्यशाली का काम होता है। यदि धार्मिक स्थलों के निर्माण की बात आती है तो कन्या के शुगन के साथ उसके पवित्र हाथों से शिलारोपण की पूजा करवाई जाती है। जाजम बिछाने के मुहूर्त पर कन्याओं के हाथों का सहारा लिया जाता है, पूजा सामग्री की शुद्धता इनके करकमलों से करवाई जाती है। शादी में रक्षा–सूत्र (राखी) बांधना आत्मीय स्नेह प्यार का प्रतीक स्वरूप कन्या ही होती है। कन्या के बिना हमारा परिवार समाज अधूरा होता है, अधूरा ही नहीं अपूर्ण समझा जाता है। कहा जाता है कि जिस परिवार के आंगन (चौंक) में कन्या की शादी नहीं हुई वह आंगन कवांरा ही समझा जाता है। परिवार समाज में कन्या की इतनी महत्ता होने के बाद भी हम कन्या को गला घोटकर, जिन्दा दफनाकर, सांस बंद कर या फिर पेट में उसके भ्रूण की हत्या कर जघन्य अपराध करते हैं।

कन्याओं को बोझ 'समझने' और उन्हें मारने की परिस्थितियां उत्पन्न होने के पीछे मुख्य रूप से कारण उसकी शादी पर अन्धाधुद खर्च करने की प्रवृति उत्पन्न होना है। जिसके लिए पैसे का जुगाड़ आड़े आता है। इस अंधाधुन खर्च से बचने के लिए कन्या को मारने की मजबूरी हो रही है।शादी के बाद कन्या को दिया जाने वाला दहेज, कन्या की हत्या का मुख्य कारण बन गया है। अर्थाभाव से पीड़ित ही नहीं अपितु, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न भी कन्या के ससुराल वालों की लालची भावनाओं, हीन भावनाओं, दुर्भावनाओं के साथ मनमानी मांगों की पूर्ति करते थक जाते है तब उसे इस कष्ट, पीड़ा, ग्लानि से मुक्ति पाने की राह कन्या हत्या की ओर ले जाती है। मेरा वंश चले बस इसके लिए लड़के की आस में कन्या की बलि चढ़ जाती है। लेकिन मनुष्य ने यह नहीं सोचा कि जब कन्या नहीं होगी तो वंश को जन्म कौन देगा? यदि इस सोच को आत्मसात करले तो सम्भवतः कन्या की हत्या के लिए मन कभी तैयार नहीं होगा और हाथ कभी उठेंगे नहीं।

सदियों से भारत में कन्या हत्या का किसी न किसी कारण से सिलसिला चला आ रहा है। वह उस समय की धारणा को सामाजिक कुरीति, प्रथा से जोड़ा गया था। लेकिन आधुनिक समय में तो यह भ्रूण हत्या के रूप में उभरता हुआ भारत की सभी प्रकार की संस्कृति परम्पराओं को चौपट कर रहा है। कन्याओं की भ्रूण हत्याओं से देश का लिंगानुपात लड़खड़ाने लगा है। कन्याओं की अपेक्षा पुरूषों की संख्या अधिक होने से हमारी सामाजिक व्यवस्थाओं में बाधा उत्पन्न होने से कई प्रकार की स्त्री पुरूष सम्बन्धी अपराधों को बल मिल रहा है। जिसके कारण कन्याओं पर शारीरिक शोषण की वारदाते बढ़ी है। कन्याओं के अपहरण हो रहे है। बलात्कार का तांडव चल रहा है। कन्या पर अमानवीय अत्याचार अनाचार बढ़ रहे है। पशुओं की तरह कन्याओं को बेचने की स्थिति दिनों दिन बढ़ रही है। सामूहिक देह शोषण – बलात्कार की घटनाओं ने हमें कलंकित कर रखा है। कन्या भ्रूण हत्या के कारण लिंगानुपात में आई अड़चन के कारण पुरूष पत्नी पाने की होड़ में सब कुछ दांव पर लगाने को मजबूर हो गया है। यदि पैसे से पत्नी मिलती है तो ठीक अन्यथा अपराधिकृत्य करके पत्नी पाने में उसकी हिचक मिट रही है। बस यही कारण देश में अपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे है।

आजकल भारत में भ्रूण हत्या का सिलसिला मशीनरी – तकनीकी सुविधा के आधार पर दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। यह एक गंभीर समस्या बन गई है कि पति पत्नी अपनी होने वाली संतान का परीक्षण करवाकर चाहे तो औलाद पैदा कर सकती है अन्यथा गर्भ में उसकी भ्रूण हत्या कर देती है। अक्सर दम्पति पुत्र की चाह में कन्या भ्रूण की हत्या करती रहती है। यह क्रम देश भर में इतना अधिक फैल गया है कि कन्या का जन्म लेना अब मुश्किल ही नहीं टेड़ी खीर बन गया है। कन्या के भ्रूण हत्या करने में दम्पति से अधिक यदि कोई क्रूरता, निदंनीय अपराध का भागीदार है तो वह धनलोभी चिकित्सक है जो कोख में ही भ्रूण की सोनोग्राफी से लिंग की परख कर कन्या होने पर उसकी निर्मम हत्या कर देता है। दम्पति ऐसी हत्या करवाने के साक्षी होकर पाप के भागीदार बनते है वहां चिकित्सक ऐसी भ्रूण हत्या कर महापाप का भागीदार बनकर अपने कर्मबंधन को नारकीय बना देता है।

सज्जन पुरूष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीडित नहीं करता। – न्यू मैन

दम्पति की स्वीकृति पर चिकित्सक भ्रूण हत्या तो कर देता है लेकिन उसे यह मालूम होते हुए कि येसी हत्या करने के बाद मानसिक तनाव दम्पति के साथ चिकित्सक को भी इन्सानियत के कारण सताता रहता है। इतना ही नहीं ऐसे कुकृत्य करने के बाद कई प्रकार के संक्रामक रोगों की उत्पति अच्छे स्वास्थ्य के लिये बाधक बन जाती है। ऐसी हत्या करवाने वाली दम्पति भविष्य में कोख भराई के लिए तरसती एवं तड़पती है। यदि कोख भर भी गई तो बच्चे के मृत होने की सम्भावना, अपंग शिशु होने का भय, कम वजन का बच्चा होने की शंका, शारिरीक दुर्बलता आदि समस्याएं मुंह बांये खड़ी हो जायेगी। यदि ऐसी स्थिति में बच्चे को जन्म दिया तो वह जीवन भर अपने माता पिता की भ्रूण हत्या करवाने के अपराधिक कारण से पीड़ित एवं विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित होकर नारकीय जीवन जीने के साथ परिवार पर बोझ बनकर रह जावेगा।

कन्या शिशुओं की हत्या को आत्महत्या मानकर, दंड का भागी मानकर भारत में पहली बार 1775 में रेगूलेशन एक्ट बना था लेकिन वह बनने के बाद भी अधिक कारगर एवं प्रभावशाली नहीं बन पाया। उसके बाद समय–समय पर तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कन्या शिशुओं की हत्या रोकने के लिए सरकार ने कानून का सहारा लिया लेकिन सामाजिक जागरूकता एवं पारिवारिक मानसिकता में बदलाव के अभाव में वे कारगर साबित नहीं हुए। स्वतंत्रता के बाद भारत के लोकतंत्रीय व्यवस्था के कर्णधारों की इस सम्बन्ध में तब आंख खुली जब पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या में निरन्तर गिरावट होने से होने वाली अपराधिक वृत्तियों ने देश को झकझोर के रख दिया। ऐसी दुखदायी स्थिति में सरकार की सोच एवं नीतियां बनी। कानून बने। लेकिन पालना में राजनैतिक स्वार्थों ने इस को मटियामेल कर दिया। यदि सरकार कन्या भ्रूण हत्या से उत्पन्न विकट परिस्थितियों एवं समस्याओं के प्रति गम्भीर एवं सचेत रहती तो शायद यह कलंकी अपराध रूक जाते। परन्तु सरकार इसके प्रति न तो कठोर हुई, न वफादार, न सक्रिय एवं न सचेत। परिणाम अपराधों में निरन्तर बढ़ोतरी ने देश की समस्याओं को ओर अधिक जटिल एवं गंभीर बना दिया। आजादी के बाद सभी देशवासियों ने सोचा था कि भारत पुनः सोने की चिड़ियां बन कर देश में समृद्धि, खुशहाली आयेगी। लेकिन लोकतंत्र में वोटों की राजनीति ने सारागुड़–गोबर कर दिया है जिसके कारण देश इस समय आंतकवाद से झुंझ रहा है। जातिवाद में फंस गया है। पर्यावरण के कष्ट भोग रहा है। आरक्षण की आग में जल रहा है। जनसंख्या वृद्धि से छटपटा रहा है। भ्रष्टाचार में कलंकित हो रहा है। मंहगाई की मार से दब रहा है। गोहत्या से डूब रहा है। हिंसक प्रवृतियों से कहरा रहा है। कई प्रकार की समस्याएं मुंह बांयें भारत को पुनः सोने की चिड़ियां बनाने में बाद्यक बनी हुई है। उसमें एक गंभीर समस्या ओर जुड़ गई है। वह है कन्या भ्रूण हत्या! इसने तो सभी समस्याओं को अपने से पीछे धकेल दिया है जिसका मुख्य कारण लिंगानुपात में कमी/पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की कमी। महिलाओं की कमी के कारण, इसकी प्राप्ति के लिए जो अपराध नहीं करना होता है वहां करने की मजबूरी। इसके लिए कन्या भ्रूण हत्या के जधन्य अपराध ा को रोकना होगा। बेटी को बचाना होगा।

वाका – एक फौजी लड़का छुट्टी आया हुआ है और परिवार के सदस्यों के लिए शहर से तौफा लाने के लिए, उनकी फरमाईश पुछता है। इस पर उसका पिता क्या फरमाईश करता है–सुनिये।

& duy egj nfg;k flg

मेरे बेटे मेरी पगड़ी लाइिये, जिसकी हो शान सूरजमल आली!
नाहर सिंह की हो मरोड़ झलकती, दिखः भक्त सिंह की छाली

मेरी पगड़ी के तुरे पः मेरे गुरू जणों का बास हो
दादा लक्ष्मी संग हो बाज्जे भक्त, जाट मेहर सिंह खास हो!
हाली पाली मैं चाँहु देखणा, गेल में सुभाष हो
मेरी कौम का देव निराला, छोटूराम भी पास हो
युवाओं में चास हो, दिखा घर मनः दिवाली
मेरे बेटे मेरी पगड़ी लाइिये.....

रोहतक का नक्शा, हो मेरी पाग पः, देशवाली खाप हो
गुड़गामे का हो रंग छलकता, किले हिसार की छाप हो
सिरसे कैथल की हो गअुवाही, कुल क्षेत्र में कृष्ण आप हो
यमुना–सरस्वती का नीर पवित्र, जींद की ताप हो
आसमान बरगा जिसका नाप हो, दुनिया की देखी भाली।
मेरे बेटे मेरी पगड़ी लाइिये.....

एक बात और मेरे बेटे, मेरी पगड़ी में होनी चाहिये
मेरी कुर्बानी का रंग कैसरिया, शांति का सफेद मिलाइये
मेरे सबर का हो रंग लीला, भेले की झलक दिखाइये
मेरी मस्ती का हो रंग गुलाबी, मेरे ठट्टाँ ने गेल रलाईये
तेरी माँ का फोटो जरूर तू लाइये, जो सदा तंः घर रूखवाली
मेरे बेटे मेरी पगड़ी लाइिये.....

एक और रंग हो बसन्ती, मेरी फसल फलती फूलती हो
हरे गेहुँ की क्यारी में, सरसों की डाल झूमती हो
खेत क्यारी में हो खुशहाली, ना बदहाली कित कूलहती हो
36 जात के चेहरे पः, खुमारी खास टूहलती हो
बैरी कः आगः ना झुकती हो, उस मालिक ने सदा सम्भाली
मेरे बेटे मेरी पगड़ी लाइिये.....

एक और रूप मैं चाहूँ देखणा, कदे भूल तेरे तंः हो ज्या
मेरी बात का तूँ चेता करिये, मेरी पोती न कदे खो ज्या
पगड़ी मेरी का मान घटेगाः अगत भी रोणा रो ज्या
पोते की भी झलक दिखाईये, कदे कुणबे पड़ कः सो ज्या
भाईचारा जिसतँः कटठा हो ज्या, कर्नल मेहर सिंह ने आण सम्भाली।
मेरे बेटे मेरी पगड़ी लाइिये.....

List of Donors for Construction of Building

Sh. Naresh Kumar Malik, Chairman, Mansha & Eden Group of Companies, Faridabad.		250,000.00
Sh. Satbir Singh Punia, Director, DRP, Ltd. Rohtak.		51000.00
Sh. R. K. Malik, SR. Adv.	112, Sector 10-A, Chd.	51000.00
Sh. K. S. Tomar, IPS(Rtd.)	174, Sector 6, Pkl.	31000.00
Dr. M. S. Malik, IPS(Rtd)	222, Sector 36-A, Chd.	21000.00
Sh. Jagat Singh Hooda	38, Shivalik Vihar, Zirakpur (Pb.)	11000.00
Sh. Ketan Chaudhary	77, HBC, Sector 14, Pkl.	11000.00
Sh. Jagbir Singh s/o Sh. Maha Singh	VPO: Nirjan, Distt. Jind (Haryana)	11000.00
Sh. Manoj Kumar s/o Sh. Ramesh Chand	VPO: Rulha Kheri, Distt. Yamuna Nagar.	11000.00
Dr. Rajeev Taliyan	507, B/2, BITS Campus, Pilani (RJ)	11000.00
Sh. Prem Malik, IFS (Rtd.)	464, Sector 2, Pkl.	5100.00
Sh. Wazir Singh Sandhu	1459, Sector 23, Chd.	5100.00
Col. Pirthi Singh (Rtd.)	L-173, AWHO, Sector 4, MDU, Pkl	5100.00
Dr. Sarita Malik, HCS	222, Sector 36-A, Chd.	5100.00
Ms. Sarika Malik	171, Sector 7, Pkl.	5100.00
Dr. K. S. Dangi, Director AH (Rtd.)	# 619, Sector 6, Pkl.	5100.00
Sh. Sajjan Goyat	Sports Officer, HVPN Ltd. (Rtd.) Pkl.	5100.00
Dr. C. P. Malik	402, GH-11, Sector 20, Pkl	2100.00
Sh. Ravinder Punia S/o Sh. Virender Singh Punia	507, Sector 21, Pkl.	2100.00
Sh. Joginder Bachhal	690, B-2, Near MC. Office, Pinjore	2100.00
Sh. Har Narian, DSP(Rtd.)	VPO: Jassia, Distt. Rohtak.	2100.00
Sh. Rajabir Singh	HARCO Bank, Chd.	2100.00
Sh. Ramesh Dahiya	1652, Sector 25, Pkl.	2100.00
Sh. Manjeet Gulia	304, GH-18, MDC, Sector 4, Pkl.	2100.00
Sh. M. P. Dodwal	652, Sector 10, Pkl.	1100.00
Sh. Attar Singh Puwar	969, Sector 26, Pkl.	1100.00
Sh. R.R. Malik, Ex-Principal	# 763, Sector 4, Pkl.	1100.00
Dr. (Mrs) Rajwanti Mann	764-A, Sector 7, Chd.	1100.00
Sh. Mahabir Chhikara	745, GH-107, Sector 20, Pkl.	1100.00
Sh. Satya Pal Malik	59, Gobind Vihar, Baltana Pb.	1100.00
Sh. Jai Singh Dudi	C-34, GH-92, Sector 20, Pkl.	1100.00
Sh. Naresh Dahiya	91, GH-03, MDC, Sector 4, Pkl.	1100.00
Sh. Manbir Singh Sangwan	874, Sector 25, Pkl.	1100.00

Sh. J. S. Dhillon	1330, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. B. S. Gill	43, Sector 12-A, Pkl.	1100.00
Sh. Suraj Bhan Rathi	1526, Sector 7, Kurukshetra.	1100.00
Dr. Gajinder Jakhar	Pashudhan Bhawan, Sector 2, Pkl	1100.00
Dr. R. M. Mor	1233, Sector 11, Pkl.	1100.00
Sh. Ramesh Malik, Adv.	1340, Sector 11, Pkl.	1100.00
Sh. Yogesh Lohchab	G-62, GH-94, Sect. 20, Pkl.	1100.00
Sh. Ramesh Siwach	1429, Sector 39, Chd.	1100.00
Sh. Naveen Sheoran	108, Sector 20, Pkl.	1100.00
Sh. Manjeet Malik s/o Sh. Satbir Singh	VPO: Shamlo-kalan, Distt. Jind. (HR.)	1100.00
Sh. Richh Pal Punia	VPO: Bichpari, Distt. Sonepat	1100.00
Mrs. S. Deswal	623, Sector 7, Pkl.	1100.00
Sh. V.B. Deswal	623, Sector 7, Pkl.	1100.00
Sh. Mahavir Singh	516, Sector 12-A, Pkl.	1100.00
Sh. Krishan Dhull	917, Sector 12-A, Pkl.	1100.00
Sh. Radha Krishan Arya	Amrawati Enclave, Pinjore.	1100.00
Sh. Anand Singh	1378, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Ram Phal Nain	671, Sector 21, Pkl.	1100.00
Sh. Gurmesh Nain	721-B, Rattpur Colony, Pinjore.	1100.00
Sh. Birbal Nain	VPO: Narwana, Distt. Jind.	1100.00
Sh. Mahendar Kaliraman	245, B-2, Shiv Colony, Pinjore.	1100.00
Sh. D. S. Dhanda, XEN,	UHBPN Ltd. Pkl.	1100.00
Sh. Balbir Singh Malik	VPO: Gandhra, Distt. Rohtak	1100.00
Sh. Rajendar Singh Kharb	3, Golden Enclave, Zirakpur (Pb.)	1100.00
Sh. Dayal Singh Sangwan	996-A, Sector 12-A, Pkl.	1100.00
Sh. Nautam Singh Chhilar	1335, Sector 11, Pkl.	1100.00
Sh. Rajbir Singh Hooda	1145, Sector 20, Chd.	1100.00

AA xhrk lkjAA

tk gqvk og vPNk gqvk]
tk gk jgk g] og vPNk gk jgk g
tk gkxk] og Hkh vPNk gkxk
rqEgkjk D;k x;k] tk rqe jkr gk\
rqe D;k yk; Fk] tk rqeu [kk fn;k\
rqeu D;k iSnk fd;k] tk u"V gk x;k\
rqeu tk fy;k] ;gh l fy;k
tk fn;k] ;gh ij fn;k
tk vkt rqEgkjk g] dy fdlh dk Fkk]
dy fdlh vkj dk gkxk
ifjorZu gh lalkj dk fu;e gA

आज के कष्टों का सामना करने वालों के पास कल के कष्ट आते हुए झिझकते है। – अज्ञात

हमें जिन पर गर्व हैं

महिला कबड्डी में हरियाणा की टीम ने जीता गोल्ड मेडल

राष्ट्रस्तरीय प्रतियोगिता में निडानी की पांच खिलाड़ियों का अहम योगदान, महाराष्ट्र को हराया

पूजा जागलान अंजू दलाल खुशबु नरवाल मोनिका सिवाच साक्षी

केरल के त्रिवेंद्रम में चल रहे राष्ट्रीय खेल में प्रदेश की महिला कबड्डी टीम ने गोल्ड मेडल जीता है। इस जीत में निडानी खेल स्कूल की महिला खिलाड़ियों का अहम योगदान रहा है। खिलाड़ियों की इस सॅलता पर स्कूल में खुशी का माहौल है।

भाई सुरेन्द्र मलिक मेमोरियल खेल स्कूल निडानी की प्रिसिंपल राजवंती मलिक ने बताया कि केरल के त्रिवेंद्रम में चल रहे राष्ट्रीय खेल में शनिवार को महिला कबड्डी का फाइनल मुकाबला हुआ। इस दौरान प्रदेश की टीम ने इस मुकाबले में महाराष्ट्र की टीम को 20–17 के अंतर से हराकर गोल्ड मेडल पर कब्जा किया। उन्होनें बताया कि प्रदेश की तरफ से खेल रही सात सदस्यीता इस महिला टीम में पांच खिलड़ी उनके स्कूल की हैं। इन खिलाड़ियों में पूजा जागलान, अंजू दलाल, खुशबू नरवाल, मोनिका सिवाच व साक्षी शामिल हैं। उन्होंने खिलाड़ियों की इस सफलता पर खुशी जताई है। उन्होंनें कहा कि सभी पांचों खिलाड़ियों के राष्ट्रीय खेल में गोल्ड मेडल जीतनें पर प्रदेश सरकार की नई खेल नीति के अनुसार पांच–पांच लाख रूपये का ईनाम मिलेगा।

देश की टीम में खेलना लक्ष्य

प्रिंसिपल राजवंती मलिक ने बताया कि स्कूल की सभी पांचों खिलाड़ियों का देश की महिला कबड्डी टीम में शामिल होकर एशियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर गोल्ड मेडल लाने का लक्ष्य है। उम्मीद है कि ये सभी पांचों खिलाड़ी अवश्य ही भारतीय टीम में चुनी जाएगी और देश का नाम रोशन करेगी।

हरियाणा महिला हैंडबॉल टीम चैंपियन

नरवाना की पांच खिलाड़ियों ने प्रदेश की टीम की ओर से दिखाया दमखम

35वें राष्ट्रीय खेलों में हरियाणा महिला हेंडबॉल टीम ने राष्ट्रीय स्तर पर पहला स्थान प्राप्त किया है। हरियाणा हैंडबॉल की महिला टीम की कप्तान नरवाना की सोनिया को बनाया गया था। प्रदेश की टीम में नरवाना की पांच खिलाड़ियों सोनिया, रितू, रिंपी, अनुमित ओर गुरूमेल ने भाग लिया।

जिला खेल अधिकारी जुगमिंद्र श्योकंद ने बताया कि यह प्रतियोगिता 31 जनवरी से 14 फरवरी तक केरल में आयोजित की गई। इसमें हरियाणा महिला हैंडबॉल टीम ने महाराष्ट्र को 15 गोल से, तमिलनाडु को 10 गोल से, दिल्ली को 8 गोल से, छत्तीसगढ़ को 15 गोल से व फाइलन में पंजाब को 5 गोल से हराकर राष्ट्रीय चैंपियन बनने को गौरव हासिल किया है।

नरवाना–हैंडबॉल में विजेता हरियाणा की महिला टीम मंत्री अनिल विज के साथ

मेगा मॉडल हंट मिस्टर आंड मिस दिल्ली एन. सी.आर. 2015 प्रतियोगिता का आयोजन ग्लमबीर्ड्स एंटरटेनमेंट द्वारा दिनांक 24 जन्वरी 2015 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया,जिसके प्रथम चरण में देश भर के 4000 प्रराटियोगियों ने भाग लिया! द्वितीय चरण में 300 लड़को एवं लड़कियों षॉर्टलिस्ट किया गया,तत्पषयात तृतीय चरण में तीस लड़के एवं तीस लड़कियाँ को लिया गया, फिर चतुर्थ चरण में 15 लड़के एवं 15 लड़कियों को चुना गया और अंतिम पंचम चरण में प्रतियोगिता कठिन होती गई जैसे बैस्ट रैंम्प मॉडल माले आंड फीमेल,मिस्टर फोटोजेनिक, मिस्टर आंड मिस टेलैंटेड और बॉडी विड ब्रेन व ब्यूटी विड ब्रेन एवं मिस्टर आंड मिस पॉपुलर के अंतिम पाँच प्रतियोगियों को चुना गया जिसमें दिवाकर सिंह चाहर मिस्टर टेलैंटेड आंड मिस्टर फोटोजेनिक दिल्ली एन.सी.आर. 2015 चुने गये जिसके लिए जजो ने दिवाकर सिंह चाहर को सम्मान स्वरूप ट्रोफी,सर्टिफिकेट,एवं जीत का प्रतिकलियस पंजाबी इंडस्ट्री के जाने माने गायक श्री शंकर साहनी एवं अन्य जजो ने पहनाकर सम्मानित किया! हजारो दर्शकों ने तालियों गड़गड़ाहट द्वारा दिवाकर सिंह चाहर को सम्मान प्रदान किया!

इस प्रतियोगिता के लिए दिवाकर सिंह चाहर ने कठिनतम मेहनत की,प्रतियोगिता के दो महीने पूर्व से वो सिर्फ चार घंटे ही सोते थे, या सा इतना आसान ना था प्रतियोगिता जीतने के उपरांत विभिन्न मॉडलिंग एजेनसीओं द्वारा इनको मॉडलिंग की ऑफर मिल रही है! दिवाकर सिंह चाहर अब आगे और बड़ी प्रतियोगिता मिस्टर इंडिया की तय्यरी में मशरूफ है!

हार्दिक शुभकामनायें!!!!

दिवाकर सिंह चाहर श्री फुलवार सिंह चाहर के सुपुत्र है एवं मेकॅनिकल इंजिनियर है! उनका पता 35 मित्र विहार ,पीतमपुरा,नई दिल्ली–110034, मोबाइल–08447529951, 09268999056 पर संपर्क स्थापित किया जा सकता है!

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।